ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५६ जनवरी 2025 वर्ष १८ अंक ५

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार)

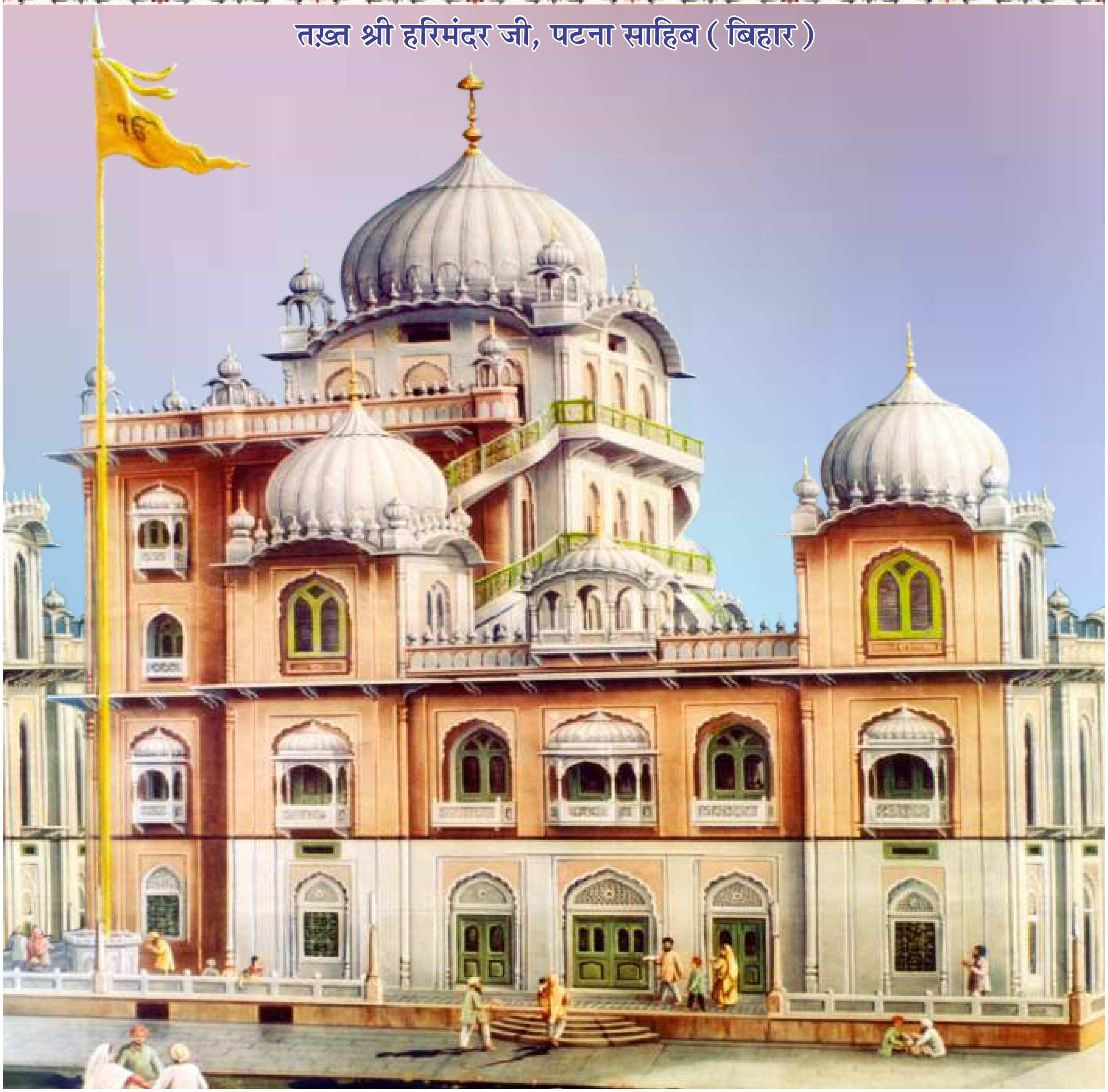

गुरुद्वारा बाल लीला साहिब, मैणी संगत, पटना साहिब (बिहार)

गुरुद्वारा कंगण घाट साहिब, पटना साहिब (बिहार)

ੴ ੴ

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष-माघ संवत् नानकशाही 556

वर्ष 18 अंक 5 जनवरी 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10	रुपये
आजीवन (देश)	100	रुपये
सालाना (विदेश)	250	रुपये
प्रति कापी	3	रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

. . . . श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 7
-डॉ. मनजीत कौर

नासिरो मनसूर गुरु गोबिंद सिंघ। 12
-डॉ. रणजीत सिंघ 'अर्श'

भक्त जैदेव जी 17
-स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'

दशम गुरु जी का मूल्य-दर्शन 22
-डॉ. वजीर सिंघ

. . . एक अहम पंथक दस्तावेज़ 27
-स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)

. . . 'चंडी की वार' की सृजन-प्रक्रिया 32
-डॉ. आत्मा सिंघ

श्री हरिमंदर साहिब की कला और सिक्ख कलाकार 36
-डॉ. हरबंस सिंघ

सिक्ख शहीद परंपरा के अनमोल रत्न : बाबा दीप सिंघ जी 41
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

हौसला 46
-स. दिनेश सिंघ

एक पाठक की प्रतिक्रिया 47

खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में पुरातन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सुमिरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेकजनों— गुरमुखों की संगत कर! उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर! तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूलि का स्पर्श कर! यही तेरा स्नान है! तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख! परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (बख्शिश) को आगे भी वितरित कर! यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि हे मानव! यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर हावी नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुण्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में भाग्यशाली है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

शुचिता सहित गुरबाणी का पठन व मनन करने से ही जनकल्याण होगा!

श्री गुरु नानक साहिब ने इस जगत में संपूर्ण एवं विशुद्ध मानव के निर्माण के लिए नानक-निर्मल पंथ की स्थापना की और अपने जीवन के उच्चतम उदाहरणों द्वारा इसे ऊंचा और बेहतर बनाया। उनके समय समाज में जिन कारणों से धार्मिक, सामाजिक और नैतिक जीवन-मूल्यों में गिरावट आ चुकी थी, उनका गुरु जी ने उति कठोर एवं भावपूर्ण शब्दों में खंडन किया। विशेषतः धार्मिक अगुओं, काज़ियों, मुल्ला-मौलानों, तथाकथित पुरोहित वर्ग, योगियों, नाथों, साधुओं और भेसधारी पाखंडियों को उन्होंने अपनी बाणी के माध्यम से सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की।

गुरु जी ने हक, सच तथा धर्म का उपदेश देने के लिए जहां खुद बाणी उच्चारण की वहीं अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान भारत के विभिन्न स्थानों से विभिन्न महापुरुषों की बाणी, जो गुरमति-आशय के साथ मेल खाती थी, को एकत्र कर अगले गुरु साहिबान के सुपुर्द करने की प्रथा चलाई। यह एक महान कार्य था, जिससे लगातार बाणी संकलित होती गई। श्री गुरु अरजन देव जी ने एकत्र समूह बाणी का संपादन-विधि द्वारा संकलन कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ तैयार की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब समूची मानवता को अपनी आगोश में लेने वाले शबद-गुरु हैं। इसमें दर्ज, चारों वर्णों को एक समान उपदेश देने वाली कल्याणकारी बाणी सर्वसाझा मानवीय भाईचारा सृजित करने के काबिल है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में अपनाकर ही विश्वव्यापी समस्याओं के हल ढूंढे जा सकते हैं, इसलिए आज ज़रूरत है श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का विश्व भर में प्रचार करने की।

आधुनिक युग में मानव ने अपने ऐश-ओ-आराम के लिए असंख्य सुख-सुविधाएं और साधन पैदा कर लिए हैं। ये साधन जहां मानवीय जीवन को आसान बना रहे हैं, वहीं कई समस्याओं का कारण भी बन रहे हैं । यदि हरेक साधन को संयम और किसी सीमा में रह कर इस्तेमाल किया जाए तो ठीक होता है, परंतु यदि इनका अत्यंत अनावश्यक रूप से इस्तेमाल शुरू हो जाए तो वे साधन जहां मानवता के लिए हानिकारक होते हैं, वहीं समूची कुदरत,

वातावरण, वनस्पति आदि के लिए भी हानिकारक हो जाते हैं, जिसके परिणाम हम हवा-प्रदूषण, पानी-प्रदूषण, वैश्विक तपिश आदि रूपों में देख रहे हैं। सत्ता-प्राप्ति और शक्ति की दौड़ के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक मुल्कों का आपसी खींचतान वाला रवैया सामने आ रहा है। ऐसे हालात में धर्मी लोगों के अलावा धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं का यह कर्त्तव्य बनता है कि वे मानवता का मार्गदर्शक बनने के लिए गुरबाणी की मशाल पकड़ कर आगे आएं।

गुरबाणी में हरेक साधन और स्रोत का प्रयोग संयम में रह कर करने की जहां प्रेरणा दी गई है, वहीं मानव-मात्र को *''अंजन माहि निरंजनि''* रह कर अपना तथा समाज का कल्याण करने के लिए प्रेरित किया गया है । संयम भरपूर जीवन जीने और अकाल पुरख के आगे *''जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि।।''*की अरदास ही मानवता को सही मार्ग दिखा कर, भ्रातृभाव वाला संसार सृजित करने के योग्य हो सकती है।

हमें गुरमति के अनुसार जीवन जीते हुए कुदरत के प्रति, समाज के प्रति और विशेषतः अपनी कौम के प्रति नैतिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना चाहिए। पंथ-विरोधी ताकतों के द्वारा सिक्ख पंथ में जो दुविधाएं पैदा करने वाला माहौल सृजित किया जा रहा है उससे सचेत होकर हमें पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा और अपनी केंद्रीय शक्ति के साथ जुड़ने की ज़रूरत है। यदि हम अपनी केंद्रीय शक्ति के साथ जुड़े रहेंगे तभी अपनी मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों को इन दुविधाओं, आशंकाओं में से निकाल कर गुरबाणी तथा अपनी अमीर विरासत एवं लासानी इतिहास के साथ जोड़ सकेंगे। हमें सबसे पहले *''होइ एकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ।।''*वाली गुरमति-युक्ति को अपनाकर गुरमति के आदर्श *''सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन।।''* के अनुसार पंथक एकता व मानव-भाईचारे के प्रहरी बनना पड़ेगा, तभी हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं को विश्व भर में प्रचारित कर सकेंगे, जिससे पंथ की चढ़दी कला के साथ-साथ समूचा जन-कल्याण होगा।

साहिब-ए-कमाल, बादशाह दरवेश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

-डॉ. मनजीत कौर*

सिक्ख पंथ से खालसा पंथ तक के रूहानी एवं विलक्षण सफर में समस्त गुरु साहिबान का परम उद्देश्य यही रहा कि मानवता को समस्त बंधनों से मुक्त करवा कर एकता के सूत्र में पिरोया जाए, ताकि सभी प्रेम, शांति, भातृ-भावना, स्वाभिमान एवं गैरत भरी जिंदगी जीने की कला सीख कर ''न किसी पर जुल्म करें और न ही किसी का जुल्म सहन करें,'' ऐसी शक्ति का संचार कर उसका सदुपयोग करते हुए संत-सिपाही वाले गुणों से ओत-प्रोत होकर सकून भरा जीवन जी सकें।

उपरोक्त मानवीय स्वरूप को पूर्णतया साकार करने हेतु भारतीय इतिहास की विकट परिस्थितियों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश पौष सुदी ७, संवत् १७२३ (२२ दिसंबर, १६६६ ई.) को नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा परम पूजनीय शख्सियत माता गुजरी जी के घर पटना साहिब (बिहार) में हुआ। गुरु जी ने अपने जगत में आने के परम उद्देश्य को 'बचित्र नाटक' में स्पष्ट करते हुए पावन फरमान किया है :

हम इह काज जगत मो आए।।
धरम हेत गुरदेव पठाए।।
जहां तहां तुम धरम बिथारो।।
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो।।४२।।
याही काज धरा हम जनमं।।
समझ लेहु साधू सभ मन मं।।
धरम चलावन संत उबारन।।
दुसट सभन को मूल उपारन।।४३।।६।।

गुरु जी के आगमन-काल में हिंदुस्तान पर मुगल सलतनत अपने नापाक इरादों से पूर्णतया आधिपत्य स्थापित कर चुकी थी। इस दौरान दिल्ली का बादशाह औरंगजेब था, जो अपने पिता बादशाह शाहजहाँ को कैद कर तथा अपने भाइयों को बेरहमी से कत्ल करवा कर तख्त पर काबिज हुआ था। उसकी कट्टरता, हठधर्मिता एवं निरंकुशता जनसाधारण के लिए जी का जंजाल बन गई थी। मानवता त्राहि-त्राहि कर उठी, हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया गया, मंदिर तोड़े गए, जजिया कर लागू किया गया। यहीं नहीं, जो इसलाम कबूल न करता उसे मौत के घाट उतार दिया जाता। ऐसी भयावह स्थिति में श्री अनंदपुर साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में अत्याचार से व्यथित कश्मीरी पंडितों के शिष्ट वर्ग ने पंडित कृपाराम के नेतृत्व में पहुंच कर व्यथा को बयान किया और इस गहन संकट से उबारने हेतु गुहार लगाई। इस दौरान ९ वर्षीय श्री गोबिंद राय जी ने गुरु-पिता जी से उनकी गंभीरावस्था का कारण पूछा तो गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने औरंगजेब के जुल्मों की

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

दास्तान सुनाई। श्री (गुरु) गोबिंद राय जी ने तुरंत प्रश्न किया कि "गुरु-पिता जी! इनकी रक्षा के लिए क्या करना होगा?" गुरु-पिता जी! का जवाब था— "किसी महापुरुष को बलिदान देना होगा।" इस पर श्री (गुरु) गोबिंद राय जी ने साहसपूर्वक कहा, "पिता जी! आप से महान इस समय कौन है दुनिया में! आप अपना बलिदान देकर इनके धर्म की रक्षा करिए!"

यकीनन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जगत में धर्म के रक्षक, पथ-प्रदर्शक तथा मुक्ति-दाता बन कर आए थे। भाई संतोख सिंघ ने इस संदर्भ में हकीकत बयान करते हुए कितना सटीक लिखा है कि गुरु जी की आमद समाज के परम्परागत ढांचे को बचाने तथा कुरीतियों का नाश कर धर्म की भावना को संबल देकर प्रफुल्लित करने में कारगर सिद्ध हुई :

छाय जाती एकता अनेकता बिलाय जाती,
होवती कुचीलता कतेबन कुरान की।
पाप ही प्रपक्क जाते धरम धसक जाते,
बरन गरक जाते सहित बिधान की।
देवी देव देहरे संतोख सिंघ दूर होते,
रीति मिट जाती कथा बेदनि पुरान की।
श्री गुरु गोबिंद सिंघ पावन परम शूर,
मूरत न होती जउपै करुण निधान की।

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक ही समय में संत भी हैं और सिपाही भी, महान देश-भक्त भी और महान दानी भी, गुरु भी और शिष्य भी। उनकी पांच विलक्षणताएं खास हैं :—

१. महान त्याग और स्वयं को न्योछावर करने का जज्बा।

२. अन्याय से जबरदस्त टक्कर लेने का अद्‌भुत साहस।

३. सम्पूर्ण मानव जाति के साथ बिना भेदभाव के अटूट प्रेम का रिश्ता।

४. आपे गुरु और आपे चेला होने का कमाल।

५. अकाल पुरख (ईश्वर) के साथ गहरा प्रेम।

अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त उपरोक्त पांच पहलू ऐसे हैं जो दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत रखने वाले में भी नहीं पाये गए।

खालसा पंथ की सृजना : खालसा पंथ की सृजना ईश्वर की मौज तथा समय की मांग थी। इसके लिए समूची कौम को योद्धा बनाना पहली शर्त थी। उस समय जात-पांत, ऊंच-नीच के भेदभाव से ग्रसित भारतीय लोग मुगलों के अत्याचारों से भयभीत होकर इस कद्र दीन-हीन हो चुके थे कि उनकी मनोदशा तरसयोग्य बन गई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उनमें अद्‌भुत शक्ति का संचार करना चाहते थे, जबकि उनकी मनोस्थिति उस समय इस प्रकार थी :

हम तो तोलन जाने तकड़ी।
नंगी करद कभी नहीं पकड़ी।
चिड़ी उड़े हम डर जाएं।
मुगलों से कैसे लड़ पाएं?

जब मुगलों के शासन-काल में गैर-मुसलिमों के सिर पर पगड़ी बांधने, शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने, केश रखने तक की अनुमति नहीं थी, गुरु कलगीधर पातशाह ने उन्हें केश रखने, पगड़ी बांधने, शस्त्र धारण करने एवं घुड़सवारी करने हेतु प्रोत्साहित किया तथा अपनी

प्रबल इच्छा-शक्ति को यूं बयान किया :

गीदड़ों से मैं शेर बनाऊं।।
चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं।।
सवा लाख से एक लड़ाऊं।।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।।

दशम गुरु जी ने समतावादी समाज की संकल्पना की तथा १६९९ ई. में खालसा पंथ की स्थापना की। परिणामस्वरूप भारतीय इतिहास में एक नवीन मोड़ आया। विविध धर्मों, कर्मों एवं भाषाओं के लोगों को एक ही बर्तन (बाटे) से अमृत-पान करवा कर सदियों से भारत को दीमक की तरह चाट रही जात-पांत की दीवारों को धराशायी कर दिया।

आपे गुरु-चेला : जिन पांच प्यारों को सर्वप्रथम गुरु जी ने अमृत-पान करवाया था, उन्हीं से स्वयं अमृत की याचना की और उन्हें गुरु खालसा जी का मान-सम्मान प्रदान करते हुए उनसे अमृत-पान कर 'गोबिंद राय' से 'गोबिंद सिंघ' हुए। इतिहास गवाह है किसी भी युग में शिष्य बेशक कितना भी योग्य क्यों न हो, शिष्य, शिष्य ही रहा तथा गुरु, गुरु ही रहा, लेकिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह भेद ही मिटा दिया। उन्होंने जहां अपने नाम के साथ 'सिंघ' शब्द का प्रयोग किया वहीं अपने सिंघों व सिंघनियों को भी क्रमशः 'सिंघ' और 'कौर' शब्द अपने नाम के साथ लगाने का आदेश दिया। अपने सिक्खों को 'गुरु खालसा' की उपाधि से अलंकृत करने वाले गुरु जी की इस विलक्षणता को भाई गुरदास जी ने इस प्रकार अभिव्यक्ति दी है :

वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला।।

(*वार ४१:१७*)

युद्ध-योजना का निर्माण : गुरु जी ने 'वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु जी की फतह' का उद्घोष कर अपने खालसे में यह भाव कूट-कूट कर भर दिया कि वे सत्य के मार्ग पर जो भी कार्य कर रहे हैं सब ईश्वरीय कार्य हैं। गुरु जी ने 'होली' त्यौहार के प्रचलित स्वरूप को 'होला-महल्ला' के रूप में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाने की युक्ति बतलाई, झूठे रंगों से निकाल कर सच्चे रंग में रंगने की सीख दी। बाहरी आक्रमणों से बचाव हेतु गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में पांच किलों का निर्माण करवाया। गुरु जी की दूरदृष्टिता, दिनो-दिन बढ़ती शक्ति एवं प्रतिष्ठा ने औरंगजेब बादशाह की नींद उड़ा दी। यही नहीं, गुरु जी के बढ़ते प्रताप को पहाड़ी राजा भी बर्दाश्त नहीं कर सके, अतः उनकी ईर्ष्या एवं द्वेष की भावना भी गुरु जी के प्रति निरंतर बढ़ती गई। इतिहासकारों के विचारानुसार पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या ने गुरु जी पर कई युद्ध थोपे और गुरु जी को अपनी सुरक्षा हेतु युद्ध लड़ने पड़े। औरंगज़ेब, सरहिंद का नवाब तथा पहाड़ी राजा, सभी मिल कर कुटिल चालें चल रहे थे। इसकी खबर लगते ही गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में युद्ध-योजना निर्मित की और तैयारी शुरू कर दी। गुरु जी पर १४ जंगें थोपी गईं। गुरु जी ने विकट से विकट परिस्थिति में भी समस्त युद्धों में विजय हासिल की। गुरु जी ने दीना कांगड़ गांव से हिंदोस्तान के अत्याचारी बादशाह औरंगज़ेब को 'जफरनामा' (जिसे विजय-पत्र भी कहा जाता है) लिखा।

इसमें बादशाह के अयोग्य कर्मों के लिए उसे फटकार लगाई और स्पष्ट लिखा कि जब ज़ुल्म हद से ज़्यादा बढ़ जाए और वार्तालाप से उसे रोकने के समस्त रास्ते बंद कर दिए जाएं तो कृपाण (तेग) का प्रयोग करना शत-प्रतिशत उचित है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुजशत ।।
हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत ।। २२ ।।

(ज़फ़रनामा)

मानवतावादी दृष्टिकोण : गुरु जी सैन्य योद्धा के रूप में भी दया, करुणा एवं सहृदयता के भावों से परिपूर्ण थे। इसका एक पुख़्ता प्रमाण यह भी है कि गुरु जी युद्ध के समय जो तीर प्रयोग किया करते थे उसकी नोक पर सोना जड़ा होता था, ताकि उस तीर से मरने वाले के अंतिम संस्कार की व्यवस्था हो सके तथा तीर से घायल होने वाले अपने इलाज की उचित व्यवस्था कर सकें। उनका प्रत्येक युद्ध सत्य के मार्ग पर चलते हुए प्रेम और अनुराग से धर्म की स्थापना हेतु था। गुरु जी ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग प्रेम को ही मानते थे। उनके चिन्तनानुसार बाहरी आडम्बरों एवं क्रिया-कलापों से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। उनकी बाणी इस संदर्भ में बड़ी सटीक है :

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै
बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ।।
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि
लोक गयो परलोक गवाइओ ।।
बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै
ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ।।
साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ।। ९ ।।

(अकाल उसतत)

समूची मानवता में ईश्वर का दीदार करने वाले गुरु जी मानव-प्रेम को ही सच्ची भक्ति व उपासना मानते थे। उनकी लड़ाई किसी भी जाति अथवा धर्म के साथ न होकर फिरकापरस्ती के विरुद्ध थी। इसी भाव को लक्षित करते हुए उनका पावन फरमान है :

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ।। . . .
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोते जानबो ।। १५ ।। ८५ ।।

(अकाल उसतत)

गुरु जी ने जात-पांत के बंधनों के कारण दुत्कारे हुए लोगों को गले से लगाया, उन्हें मान-सम्मान दिया :

इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई इनही की किरपा सभ सत्र मरै ।।
इनही की किरपा के सजे हम हैं, नहीं मों सो गरीब करोरि परै ।।

गुरु जी शुभ कार्यों की सम्पूर्णता हेतु सदैव परम पिता परमेश्वर से असीम कृपा के लिए अरदास करते हैं :

देह सिवा बर मोहि इहै
सुभ करमन ते कबहूं न टरों ।।
न डरों अरि सो जब जाइ लरों
निसचै कर अपनी जीत करों ।। . . .
जब आव की अउध निदान बनै
अत ही रन मै तब जूझ मरों ।।२३१ ।।

महान दार्शनिक एवं कलाविद : गुरु जी जहाँ महान आध्यात्मिक गुरु, शूरवीर योद्धा, उत्कृष्ट चिन्तक, आदर्श सेनानायक थे, वहाँ महान विद्वान, दार्शनिक, अनुपम कवि (बाणीकार), उच्च कोटि के साहित्यकार एवं कलाविद थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता गुरु जी की बहुआयामी बाणी का संग्रह 'दसम ग्रंथ' है। साथ ही आपका दरबार बहुभाषीय विद्वानों का सुंदर उपवन कहा जाता है। आप ५२ महान कवियों के संरक्षक थे। अनेक कवियों, विद्वानों एवं साहित्यकारों को आपने खूब मान-सम्मान प्रदान किया। गुरु जी गुणों का अगाध भण्डार थे। भाई नंद लाल जी गुरु जी की महिमा बयान करते हुए अपने हृदयोद्‌गारों को यूं अभिव्यक्ति देते हैं :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ।।
ईज़दि मनजूर गुरु गोबिंद सिंघ।।
हक रॉ गंजूर गुर गोबिंद सिंघ।
जुमला फैज़ि नूर गुर गोबिंद सिंघ।
हक्क हक्क आगाह गुरु गोबिंद सिंघ।
शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ।

अर्थात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रक्षा करने वाले हैं। गुरु जी परमेश्वर के दर पर प्रवान हैं, परम सत्य का खजाना हैं, परमात्मा की रहमतों (बख्शिशों) का समूह हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी परम सत्य को जानने की इच्छा रखने वालों के लिए रोशनी हैं तथा बादशाहों के बादशाह हैं।

सरवंशदानी, जिनका दुनिया में नहीं कोई सानी : निः संदेह दुनिया में अनेक दानी हुए हैं तन के, मन के तथा धन के, लेकिन इतिहास गवाह है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा कोई 'सरवंश एवं सर्वस्व' का दानी नहीं हुआ, जिन्होंने नौ वर्ष की आयु में पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की कुर्बानी दी। तत्पश्चात् अपने दो बड़े साहिबजादों को रणभूमि में शहीदी प्राप्त करने हेतु भेजा। उनके दो छोटे जिगर के टुकड़ों, मासूम साहिबजादों को दीवार में जिंदा चिन कर शहीद किया गया। माता गुजरी जी भी तत्क्षण ठंडे बुर्ज में शहादत प्राप्त कर गईं। अपना सर्वस्व कुर्बान कर सदैव चढ़दी कला में रहते हुए अपने प्यारे प्रियतम प्रभु को गुरु जी ने अपने दिल का संदेश इस प्रकार प्रेषित किया :

मित्तर पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा।।
तुधु बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण
नाग निवासां दे रहिणा।।
सूल सुराही खंजरु पिआला
बिंग कसाईआं दा सहिणा।।
यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा
भट्ठ खेड़िआं दा रहिणा।।

गुरु जी का अंतिम आदेश : दुष्ट-दमन, अमृत के दाते, सरवंशदानी, साहिबे-कमाल, बादशाह दरवेश कलगीधर पातशाह ने मात्र ४२ वर्ष इस सांसारिक यात्रा में विचरण करते हुए इतने महान कार्य सम्पन्न किए, जिन्हें युगों में भी सम्पूर्ण करना कठिन साधना है। अंत में गुरु दशमेश पिता परम ज्योति में विलीन होने से पूर्व आने वाले समय की नज़ाकत को समझते हुए अपने खालसे को शब्द-गुरु के संग सदा के लिए जोड़ गए।

नासिरो मनसूर गुरु गोबिंद सिंघ।

*-डॉ. रणजीत सिंघ 'अर्श' **

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महान शख्सियत के संबंध में यदि दुनिया की समस्त नियामतों और विशेषताओं के सभी गुण एकत्र किये जाएं तो भी गुरु जी की स्तुति करनी एक क़लमकार के लिए अत्यंत कठिन ही नहीं अपितु नामुमकिन है। गुरु साहिब का जीवन गुणों का खजाना है। किसी आम व्यक्ति में एक साथ इतने गुणों का होना असंभव है। अपनी छोटी-सी आयु में उन्होंने जिन असंभव-से महान कार्यों को अंजाम देकर कर दिखाया, वह किसी इंसान की तौफ़ीक के बाहर है। निश्चित् ही गुरु साहिब साक्षात् अकाल पुरख का रूप थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बहुपक्षीय शख्सियत, सच्चाई का प्रकटीकरण कर ज़िंदगी को सन्मार्ग पर चलने का संकेत देती है। गुरु साहिब का जीवन एक ऐसा प्रकाश-स्तंभ है, जो सत्य के पथ से भटके लोगों एवं भावी पीढ़ियों के नवजीवन-निर्माण में अपनी यादगार भूमिका निभाता है। ऐसे महान गुरु साहिब की स्तुति करना जीवन को शिखर की ओर उन्मुख करना है। इस सार्थक संदर्भ में गुरु साहिब जी की बहुपक्षीय शख्सियत शानदार परंपराओं एवं कालजयी शहीदियों का कोश है।

गुरु साहिब की शख्सियत ने मानव जाति को सच्चाई, पवित्रता, प्रेम और न्याय का पाठ दृढ़ करवाया था। विनय, त्याग, दक्षता, शुचिता, स्थिरता आदि सभी वंदनीय गुणों की पराकाष्ठा उनके चरित्र में मिलती है। उनके चुंबकीय व्यक्तित्व ने सभी को आकर्षित किया था। उन्होंने जालिम शहंशाह को ललकारा था एवं शक्तिहीनों को बलशाली लोगों के सम्मुख खड़ा होने का बल प्रदान किया था। आप जी ने एक आम इंसान में अपने अधिकारों और सत्य हेतु लड़ने की प्रेरणा जागृत की थी, पाखंडी और दंभियों को फटकारा था, उनके भ्रम-जाल को तोड़ा था एवं जनसाधारण की बुद्धि से सांप्रदायिकता का काला चश्मा उतार कर उसे स्वतंत्रता की भावना से रोशन कर मानवता को विकास-पथ पर अग्रसर किया था। उन्होंने मनुष्य की महानता और मानवता के संदेश को संप्रेषित किया था। वे मनुष्य-मात्र को "एकु पिता एकस के हम बारिक" समझते थे, तभी तो उन्होंने बड़े ही आत्मविश्वास से "मानस की जात सबै एकै पहिचानबो" की घोषणा की थी।

करुणा, कलम और कृपाण के धनी, संत-सिपाही, जंग के माही, इंसानियत के रहबर, अमृत के दाते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने चारों साहिबज़ादों को देश, धर्म और इंसानियत

*सदनिका क्रमांक ५, अवन्तिका रेजीडेंसी, ५८/५९, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड, पुणे— ४११०११, फोन : ९०९६२-२२२२३

के लिए शहादत प्राप्त करने की प्रेरणा दी थी। जब गुरु साहिब के महिल (सुपत्नी) ने आपको साबो की तलवंडी (श्री दमदमा साहिब) में भरे दरबार में पूछा कि साहिबजादे कहां है, तो कलगीधर पातशाह ने 'गुरु-पंथ खालसा' को अत्यंत सम्मान देते हुए बड़े ही फ़ख्र के साथ यूं फ़रमाया था :

इन पुत्रन के सीस पर, वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हज़ार।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे। आप जी ने उस समय के सभी विद्वानों एवं साहित्यकारों को अत्यंत मान-सम्मान किया था और उन्हें सूखे मेवे, अनेक कीमती वस्तुएँ तथा भरपूर धनराशि भेंटस्वरूप प्रदान किया करते थे। इतिहास गवाह है कि दशमेश पिता ने पाउंटा साहिब में एक साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया था। इस सम्मेलन में आप जी ने विद्या के महत्व को स्पष्ट कर, विद्या के महत्व को दर्शाने के लिये अपने व्याख्यान में उपदेशित किया था कि दुनिया में आए सभी प्राणी-मात्र को विद्या प्राप्त करनी चाहिए। पुस्तक 'निरमल पंथ का संखेप इतिहास' के लेखक ज्ञानी बलवंत सिंघ कोठागुरु के अनुसार आप जी ने उस समय पांच वरिष्ठ सिक्ख विद्वानों का चयन किया था। उनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. भाई राम सिंघ
२. भाई करम सिंघ
३. भाई वीर सिंघ
४.भाई गंडा सिंघ
५. भाई सैणा सिंघ

इन पाँच सिक्खों को गुरु पातशाह जी ने सनातनी धर्म-ग्रंथों के अध्ययन के लिये काशी (वाराणसी) भेजा था। इन विद्वान सिक्खों को काशी जाकर संस्कृत भाषा की विद्या ग्रहण करने की आज्ञा देकर आशीर्वाद दिया कि जो विद्या जनसाधारण १२ वर्षों में प्राप्त करते हैं उसी विद्या को आप १२ महीनों प्राप्त करेंगे।'श्री गुरु पंथ प्रकाश' नामक ग्रंथ में अंकित है :

पढो अबै तुम कांशी जाए।
निगमागम बिद्‌या मन लाए।।५३।।
और पढत जो बरसन मैं है।
तुमै महीनयों मैं सो ऐहै।।
जोतिक बिद्‌या सभि जग मै है।
गुरु घर मैं अबि आइ सु रैहै।।

इन पाँचों सिक्खों ने काशी पहुँचकर जतन नामक ब्राह्मण के वट वृक्ष के नीचे अपना आसन लगा लिया और उस स्थान पर घास-फूस की झोपड़ियाँ बना कर निवास करने लगे। यह 'जतन मठ' ही बाद में 'चेतन मठ' नाम से निर्मल संप्रदाय का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल बना।

उस समय काशी में पंडित सदानंद उच्च कोटि के संस्कृत के ज्ञाता थे। विद्या-अनुरागी इन पाँचों सिक्खों का विद्या के इसी महान पंडित सदानंद के पास ही विद्या ग्रहण करने का प्रबंध हो गया था। पूरे काशी में इन सिक्ख विद्यार्थियों की ख्याति फैल चुकी थी। कारण, जिस विद्या को सीखने में वर्षों का अभ्यास

करना पड़ता था, उसी विद्या को ये सिक्ख विद्यार्थी थोड़े ही समय में सीख गए थे।

गुरु साहिब की स्तुति में प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान और लेखक मोहम्मद लतीफ ने लिखा है कि ''गुरु साहिब धार्मिक गद्दी पर विराजमान रूहानी रहबर हैं, तख्त पर विराजमान शहंशाह के शहंशाह और मैदान-ए-जंग में महान योद्धा एवं संगत में बैठे हुए फकीर हैं। चाहे आपके शाही ठाठ-बाठ हैं मगर दिलो-दिमाग से आप पर फकीरी छाई हुई है, इसलिए आपको बादशाह दरवेश कहकर भी संबोधित किया जाता है। गुरु साहिब ने इंसानियत के प्रत्येक पक्ष को इस तरह से सजाया-संवारा और विकसित किया देखने-सुनने वाले लोग आपके बहुपक्षीय जीवन से हैरान रह जाते हैं।

गुरु साहिब का ऊंचा-लंबा कद, नूरानी चेहरा, चक्षुओं में ऐसी चमक कि लोगों के नेत्र चुंधिया जाएं। कमाल के घुड़सवार, प्रकृति के प्रेमी थे आप! जब आप सजे हुए दरबार में प्रवेश करते तो अस्त्र-शस्त्र से लैस होकर, बादशाह की तरह क़लगी सजा कर प्रवेश करते थे। गुरु साहिब जब शिकार पर जाते थे तो सुंदर तेज-तर्रार घोड़े की सवारी किया करते थे। साथ में घुड़सवारी करते हुए सवार सिक्ख होते थे। वाह! क्या नज़ारा होता होगा!...

प्रसिद्ध फ़ारसी कवि हकीम अल्लाह यार ख़ान योगी ने आप जी के संबंध में लिखा है :

इन्साफ करे जी में ज़माना तो यकीं है।
कहि दे गुरु गोबिंद का सानी ही नहीं है।...
करतार की सौगंध है नानक की क़सम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वो कम है।
हरचंद मेरे हाथ में पुर ज़ोर कलम है।
सतिगुर के लिखूं वसफ कहां ताबि-रकम है।
इक आँख से क्या बुलबुला कुल बहिर को देखे!
साहिल को या मझधार को या लहर को देखे!१८।। *(गंजि-शहिदां)*

सूफी संत किबरिया ख़ान ने अपने अंदाज में लिखा है :

क्या दशमेश पिता तेरी बात कहूं,
जो तूने परउपकार किए।
इक खालिस खालसा पंथ सजा,
जातों के भेद निकाल दिए।
इस मुल्क-ए-वतन की ख़िदमत में,
कहीं बाप दिया, कहीं लाल दिए।

गुरु साहिब की अन्य विशेषताओं को समझना हो तो हमें 'गंजनामा' नामक ग्रंथ का अध्ययन करना होगा। इस ग्रंथ में गुरु साहिब के दरबार में अपनी सेवाएं देने वाले ५२ कवियों में से एक भाई नंद लाल जी की रचनाएं आलोकित हैं। इन रचनाओं में भाई नंद लाल जी ने अत्यंत खूबसूरती से गुरु साहिब की शख्सियत को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाली राह का मार्गदर्शक बताया है। गुरु साहिब की शख्सियत झूठ और कुमति के अंधेरे को दूर कर मानवीय जीवन को इंसानियत की रोशनी प्रदान करती है।

अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में भाई नंद लाल जी औरंगजेब के पुत्र मुअज़्ज़म बहादुर शाह को फ़ारसी भाषा की शिक्षा दिया करते थे। आप जी

फ़ारसी भाषा के उच्च कोटि के विद्वान थे। औरंगजेब भाई नंद लाल जी की विद्वता को देखकर दंग रह गया और हुक्म दिया कि या तो भाई नंद लाल जी को दीन-ए-इसलाम कबूल करवाया जाए या इसका कत्ल कर दिया जाए! भाई नंद लाल जी अपना धर्म और प्राण बचाने हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरण में श्री अनंदपुर साहिब चले आए। गुरु जी भाई नंद लाल जी की विद्वता से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने भाई जी का उत्साहवर्धन करते हुए और भी कुशलता से साहित्य-सृजन करने का अवसर प्रदान किया। भाई नंद लाल जी अपनी तमाम उम्र गुरु साहिब के सान्निध्य में रहकर साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं देते रहे थे।

ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि एक बार गुरु साहिब तथा भाई नंद लाल जी और कुछ सिक्ख टहल रहे थे। गुरु साहिब ने एक पत्थर उठाकर नदी में फेंक दिया एवं अपने सिक्खों से पूछा कि यह पत्थर क्यों डूब गया? उन्होंने जवाब दिया कि पत्थर भारी होने के कारण डूब गया। जब गुरु साहिब ने भाई नंद लाल जी से पूछा कि आप बताएं, यह पत्थर क्यों डूब गया, तो भाई नंद लाल जी ने जवाब दिया कि ''गुरु जी! न मैंने पत्थर देखा, न पानी! मुझे तो इतना पता है कि जो आपके हाथ से छूट गया, वो समझो डूब गया!'' इतनी अधिक श्रद्धा थी भाई नंद लाल जी की गुरु साहिब के प्रति! एक बार गुरु साहिब ने भाई नंद लाल जी से वचन किया कि आप भी कुछ मांग लो, तो उन्होंने जवाब दिया कि ''मुझे तो आपके नूरानी चेहरे में पूरी कायनात के दर्शन होते हैं। इससे अधिक मुझे क्या चाहिए?'' इस वार्तालाप के पश्चात जब गुरु साहिब ने कुछ तो मांगने के लिए कहा तो आपने अपनी निष्काम सेवाओं को प्रकट करते हुए वचन किये कि ''हे सच्चे पातशाह! मेरी तो एक ही मांग है कि जब मेरी मृत्यु हो तो मेरे तन की राख को भी आपके चरणों का स्पर्श प्राप्त होका रहे!'' गुरु साहिब को श्री अनंदपुर साहिब का क़िला खाली करना पड़ा तो उस समय भाई नंद लाल जी ने कहा कि ''गुरु पातशाह! मेरा भी दिल करता है कि मैं भी खंडे-बाटे की पाहुल छककर (अमृत-पान कर) सिंघ सज जाऊं और युद्ध में आपका सैनिक बन कर भाग लूं!'' उस समय गुरु साहिब ने कहा कि ''तेग चलाने वालों को तेग चलानी चाहिए और क़लम चलाने वालों को कलम। आपकी कलम एक योद्धा (सैनिक) की भांति चलनी चाहिए। एक योद्धा से अधिक ताकत क़लम की होती है। कलम सही मायने में चले तो वो कई योद्धा पैदा कर सकती है। कलम नेकी, धर्म, सुमिरन, त्याग और शुभ आचरण का पाठ भी पढ़ाती है। आप मुलतान अपने पैतृक गांव जाएं और अपनी कलम द्वारा धर्म की कीर्ति एवं प्रभु का यशगान करें!''

भाई नंद लाल जी की क़लम से गुरु साहिब की उपमा में प्रस्फुटित शब्दों की माला देखें :

नासिरो मनसूर गुरु गोबिंद सिंघ।..

ईज़दि मंजूर गुरु गोबिंद सिंघ।..
हक रा गंजूर गुरु गोबिंद सिंघ।..
जूमला फैजि नूर गुरु गोबिंद सिंघ।..
हक हक आगाह गुरु गोबिंद सिंघ।..
शाहि शहनशाह गुरु गोबिंद सिंघ।..
ख़ालिसो बे-कीना गुरु गोबिंद सिंघ।..
हक हक आईना गुरु गोबिंद सिंघ।..
हक हक अंदेश गुरु गोबिंद सिंघ।..
बादशाह दरवेश गुरु गोबिंद सिंघ।..

इन सभी खूबियों से जगजाहिर होता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हिंदुस्तान की रूहानी शख्सियत थे। निश्चित ही आपका ऊंचा और पवित्र जीवन इंसानियत व प्रेम के जज्बे से ओतप्रोत था। जहां आपके जीवन में एक संत-सिपाही की प्रतिमा झलकती है, वहां आप जी समाज-सुधारक, कौमी-एकता की पहचान और महान जरनैल भी थे। आप जी निडर थे और लोभ-लालच से परे थे। आप जी ने कभी भी जर, जोरू और ज़मीन के लिए ज़ंग नहीं लड़ी थी और न ही किसी पर जुल्म कर दुख पहुंचाने के लिए जंग लड़ी थी। आपकी जंग मज़लूमों की रक्षा के लिए थी और जोर-ज़ब्र के आतंक को समाप्त करने के लिए थी। आप जी ने न किसी की दौलत को लूटा था और न ही किसी की सम्पत्ति पर कब्जा किया था, न ही किसी बहू-बेटी को बे-आबरू किया था। आपने जो ज़ंग लड़ी वह केवल और केवल धर्म सिद्धांतों के लिए थी। सत्य एवं मानवाधिकारों की रक्षा करने के लिए आपने उस समय कृपाण उठाई थी जब शांति के सारे रास्ते बंद हो गए थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के व्यक्तित्व का आयाम मानों हिमालय के शिखर पर विराजमान था। गुरु साहिब की राष्ट्र के प्रति अगाध निष्ठा थी। यदि इस देश की पश्चिमी सीमाएं अनेक आक्रमणों को झेलने के पश्चात भी आज बिना किसी नुकसान के शान से खड़ी हैं तो इसमें निश्चित ही सिक्ख गुरु साहिबान का मार्गदर्शन और गुरु-पंथ खालसा की शहीदियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस देश की मिट्टी, इस देश की भूमि, आकाश, पानी और यहां की वायु, निश्चय ही गुरु-पंथ खालसा कर्जदार है, देनदार है। कौमी हित में अपना सरवंश वार देना, स्वयं के रक्त का एक-एक कतरा बहा देना, एक-एक श्वास को वतन के सुपुर्द कर देना ही कौमी-निष्ठा होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हमें एक सूत्र में पिरोकर सिखाया है कि धर्म तोड़ना नहीं, अपितु जोड़ना सिखाता है, धर्म गिराना नहीं, अपितु उठाना सिखाता है, धर्म बांटना नहीं, अपितु एकता में पिरोना सिखाता है।

इस आलेख के अंत में गुरु साहिब की स्तुति में हकीम अल्लाह यार ख़ान योगी की इस नज़म से उन्हें नवाज़ा जा सकता है :

किस शान का रुतबा तेरा अल्लहु ग़नी है।
मिसकीन ग़रीबों में दलेरों में जरी है।
'अंगद' है, 'अमरदास' है,
'अरजन' भी तू ही है।
'नानक' से लेकर 'तेग बहादर' तू सभी है।

भक्त जैदेव जी

-स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'*

भक्त जैदेव जी का जन्म सन् ११७० ई. में पिता श्री भोजदेव जी तथा माता बामदेवी जी के घर, गांव केंदुली, जिला बीरभूम (पश्चिमी बंगाल) में हुआ था। कुछ इतिहासकार भक्त जैदेव जी का जन्म, उड़ीसा राज्य में प्राची नदी के किनारे बसे केंदुली गांव में हुआ बताते हैं। बहुतात इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि भक्त जैदेव जी का जन्म, अजोय नदी के किनारे बसे एक छोटे-से गांव केंदुली, जिला बीरभूम (पश्चिमी बंगाल) में हुआ था। आजकल इस स्थान का नाम, भक्त जैदेव जी के नाम पर जोएदेव केंदुली (जैदेव केंदुली) करके प्रसिद्ध है।

जैदेव केंदुली में जिस स्थान पर भक्त जैदेव जी का जन्म हुआ था, उस स्थान पर भक्त जैदेव जी व उनकी सुपत्नी (पद्मावती जी) की याद में, सुन्दर मन्दिर (जैदेव-पद्मावती मन्दिर) बना हुआ है। इस स्थान पर प्रत्येक वर्ष माघ महीने की संक्रांति को (माघी वाले दिन) भक्त जैदेव जी की याद में बहुत बड़ा मेला लगता है। बंगाली लोगों में भक्त जैदेव जी के प्रति प्रेम, सम्मान व श्रद्धा का पता इस बात से लगाया जा सकता है कि भक्त जैदेव जी को समर्पित इस मेले का उद्घाटन करने के लिए, पश्चिमी बंगाल या देश की किसी नामवर हस्ती को बुलाया जाता है। जैदेव केंदुली (जोएदेव केंदुली) से लगभग ९-१० किलोमीटर की दूरी पर, उत्तरकोना गांव के बाहर, इल्म बाज़ार-रामपुर हाट मार्ग पर, भक्त जैदेव जी की याद में सुन्दर गुरुद्वारा साहिब शोभायमान है। इस गुरुद्वारा साहिब की कार सेवा बाबा सुक्खा सिंघ सरहाली वाले करवा रहे हैं।

इन पंक्तियों के लेखक को, अपनी पश्चिमी बंगाल की यात्रा के दौरान, ३० अक्तूबर सन् २०२२ ई. को दोनों स्थानों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस दौरान, जैदेव-पद्मावती मन्दिर के पुजारी तथा भक्त जैदेव जी के अनुयायियों से मिलने का अवसर भी मिला, जिन्होंने भक्त जैदेव जी के जीवन से संबंधित बहुत सारी जानकारी साझा की।

भक्त जैदेव जी बचपन से ही बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के मालिक थे। आपको धार्मिक संस्कार, माता-पिता की ओर से विरासत में ही मिल गए थे। आपके माता-पिता जी कृष्ण-भक्त थे। आप अपने माता-पिता के साथ रोज़ाना मंदिर में जाकर, पाठ-पूजा में शामिल होते थे। यूं आपको बचपन में ही प्रेम-भक्ति की लग्न लग गई थी।

आपके माता-पिता जी बहुत गरीब थे,

*७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना—१४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००

परंतु आपकी उच्च विद्या की ओर विशेष ध्यान देते हुए, आपके माता-पिता ने आपको संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक पंडित के पास भेजा। आप जी छोटी उम्र में ही संस्कृत व अन्य भाषाओं के ज्ञाता तथा उच्च कोटि के विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हो गए थे। काव्य तथा राग में आपकी विशेष रुचि थी।

छोटी उम्र में ही आपके माता-पिता अकाल प्रस्थान कर गए। जिस कारण, आप जी वैराग्य में रहने लगे। आपके मन में संसार के प्रति उदासीनता पैदा हो गयी। आपकी विद्वता और भक्ति की महिमा दूर-दूर तक फैल गयी थी। आपकी कीर्ति सुनकर, बंगाल के राजा लछमन सैन ने आप जी को अपने दरबारी कवियों में शामिल कर लिया था। राजा लछमन सैन के दरबार में पांच कवि-रत्न थे, जिनमें से भक्त जैदेव जी एक थे।

राज दरबार में कवि होने के बावजूद, आप जी शाही ठाठ-बाठ के प्रभाव में नहीं आए। आपके हृदय में अकाल पुरख के प्रति स्नेह बढ़ता गया। आप जी प्रभु-प्रेम में लीन होकर देश-देशान्तर की यात्रा करने के लिए चल पड़े। आप जी प्राकृतिक दृश्यों को देख कर, भक्ति के रंग में रंग जाते थे और अपने हृदय की तरंगों को काव्य रूप में लिखते रहते थे। आप जी इतने वैरागी हो गए थे कि आप जी एक पेड़ के नीचे, एक रात से अधिक समय नहीं बिताते थे, आगे चल पड़ते थे। आप जी यह सोचते थे कि किसी एक स्थान पर कहीं ज्यादा समय रुक जाने से, उस धरती के साथ मोह-प्यार न पैदा हो जाए।

भक्त जैदेव जी यात्रा करते-करते जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) पहुंच गए। जगन्नाथ जी के अनुयायियों के लिए यह स्थान बहुत पूजनीय समझा जाता था। आज भी जगन्नाथ जी के अनुयायियों के लिए इस स्थान की बहुत मान्यता है। जगन्नाथपुरी में एक अग्निहोत्री ब्राह्मण का परिवार रहता था। यह ब्राह्मण जगन्नाथ जी का बड़ा भक्त था। इस ब्राह्मण के घर कोई औलाद नहीं थी। इसने जगन्नाथ जी के मन्दिर में जाकर विनती की। इस ब्राह्मण की विनती स्वीकार हुई और इसके घर में एक लड़की ने जन्म लिया। इसने मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि इस लड़की का जन्म जगन्नाथ जी की कृपा से हुआ है, इसलिए जब यह लड़की बड़ी हो गई तो मैं इस लड़की को जगन्नाथ जी को समर्पित कर दूंगा भाव कि इसे जगन्नाथ जी की सेवा में लगा दूंगा।

इस ब्राह्मण ने इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए अपनी लड़की का पालन-पोषण किया। जब पद्मावती जवान हो गई तो यह ब्राह्मण पद्मावती को साथ लेकर जगन्नाथ जी को समर्पित करने के लिए जगन्नाथपुरी के मन्दिर में पहुंच गया। वह ब्राह्मण जैसे ही जगन्नाथपुरी के मन्दिर में पहुंचा, उसे यूं लगा कि कोई अदृश्य शक्ति उसे अपनी लड़की का विवाह भक्त जैदेव जी के साथ करने के लिए प्रेरित कर रही हो। ऐसे में वह ब्राह्मण पद्मावती को साथ लेकर जगन्नाथपुरी में भगत जैदेव जी को ढूंढता-ढूंढता भक्त जी के पास पहुंच गया और कहने लगा कि "मुझे किसी अदृश्य शक्ति

ने यह प्रेरणा की है कि मैं अपनी लड़की पद्मावती का विवाह आपके साथ करूं, इसलिए कृपा करके आप पद्मावती का रिश्ता स्वीकार करने की कृपा करें! पद्मावती बहुत सुंदर है, गुणवान है। आप दोनों की जोड़ी बहुत ख़ूबसूरत लगेगी!'' परन्तु भक्त जैदेव जी तो अकाल पुरख की भक्ति में लीन रह कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे। आप जी ने सोचा कि पद्मावती मेरे साथ रहकर खुश नहीं रह सकेगी, इसलिए आप जी ने पद्मावती के साथ विवाह करने से मना कर दिया। ब्राह्मण के बार-बार कहने पर, भक्त जैदेव जी उस ब्राह्मण से कहने लगे कि ''आपको पद्मावती जी का विवाह किसी धनी व्यक्ति के साथ करना चाहिए ताकि वह सांसारिक सुख भोग सके। मेरे पास धन-दौलत और भौतिक सुखों के पर्याप्त साधन नहीं हैं। मैं सादा जीवन व्यतीत करता हूं। मुझे लगता है कि पद्मावती मेरे साथ रहकर खुश नहीं रह सकेगी।'' यह बात सुनकर, वह ब्राह्मण कहने लगा कि ''यह सब कुछ उस अकाल पुरख की इच्छा के अनुरूप हो रहा है, जिसने मुझे यह प्रेरणा की है कि मैं पद्मावती का विवाह आप जी के साथ करूं।''

यह सुनकर भगत जैदेव जी पद्मावती से कहने लगे कि ''मेरे हृदय में भक्ति की भावना बहुत प्रबल है, इसलिए मैं आपके लिए सांसारिक सुखों के साधनों का प्रबंध नहीं कर सकूंगा। मैं नहीं चाहता कि आपको किसी तरह की कोई मुश्किल आए या फिर, सुखों के साधन एकत्रित करने के चक्कर में मेरे आध्यात्मिक जीवन पर इसका कोई विपरीत प्रभाव पड़े, इसलिए आप अपने लिए कोई योग्य वर ढूंढ कर, उसके साथ विवाह कर लें तथा सुखी जीवन व्यतीत करें!''

भक्त जैदेव जी से यह बात सुनकर पद्मावती कहने लगी कि ''मेरे पिता जी ने यह संकल्प कर लिया है कि'' वे मेरा विवाह आपके साथ ही करेंगे, इसलिए मैंने भी मन ही मन आपको अपना पति मान लिया है। अब मैं अपने पति के रूप में आपके अलावा किसी अन्य के बारे में सोच भी नहीं सकती। मैं आपके साथ रह कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहती हूं। मैं आपको यह वचन देती हूं कि मैं आपकी भक्ति में कोई विघ्न नहीं डालूंगी तथा मैं भी आपके साथ भक्ति-मार्ग पर चलने का प्रयत्न करूंगी। आप जैसी आज्ञा करोगे, मैं उसी तरह अपना जीवन व्यतीत करूंगी। इसलिए, कृप्या मुझे अपनी पत्नी स्वीकार करते हुए, अपने साथ विवाह करने की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें!'' पद्मावती से यह बात सुनकर भक्त जैदेव जी ने पद्मावती से विवाह करने के लिए हां कर दी। यूं भक्त जैदेव जी व पद्मावती जी का विवाह हो गया।

भक्त जैदेव जी गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियां निभाते हुए भी अकाल पुरख की भक्ति में लीन रहते थे। आपने अकाल पुरख की उपमा करते हुए बहुत सारी रचनाएं रची। भक्त जैदेव जी की रचनाओं का एक संग्रह 'गीत गोविंद' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'गीत गोविंद' के अलावा, भक्त जैदेव जी

की रचनाओं के दो संग्रह 'रसना राघव' व 'चन्द्र लोक' भी बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

एक दिन की बात है कि 'गीत गोविंद' ग्रन्थ की रचना करते हुए आप एक जगह आकर रुक गए। आप एक पंक्ति की रचना पूरी नहीं कर पा रहे थे, जिस कारण यह 'गीत गोविंद' ग्रंथ सम्पूर्ण नहीं हो पा रहा था। आपने बहुत कोशिश की परन्तु आप पंक्ति की रचना पूरी नहीं कर सके। सारा दिन इसी सोच-विचार में निकल गया। आख़िर शाम के समय, आप जी स्नान करने के लिए नदी के किनारे चले गए। स्नान करके वापिस आए और 'गीत गोविंद' ग्रंथ को सम्पूर्ण करने के लिए फिर से खोला तो क्या देखते हैं कि इस ग्रन्थ की रचना पहले से ही सम्पूर्ण हुई पड़ी है। आपको यह समझते देर नहीं लगी कि यह कैसे हुआ है। आप आश्चर्यचकित रह गए। आपके हृदय के कपाट खुल गए। इस घटना के बाद आपका अकाल पुरख के साथ प्रेम व स्नेह और भी बढ़ गया।

भाई गुरदास जी ने इस वृत्तांत को अपनी दसवीं वार की दसवीं पउड़ी में यूं वर्णित किया है :

प्रेम भगति जैदेउ करि गीत
गोविंद सहज धुनि गावै।
लीला चलित वखाणदा
अंतरजामी ठाकुर भावै।
अखरु इकु न आवड़ै पुसतक
बंन्हि संधिआ करि आवै।
गुण निधानु घरि आइ कै
भगत रूपि लिखि लेखु बणावै।
अखर पढ़ि परतीति करि
होइ विसमादु न अंगि समावै।
वेखै जाइ उजाड़ि विचि
बिरखु इकु आचरजु सुहावै।
गीत गोविंद संपूरणो पति पति
लिखिआ अंतु न पावै।
भगति हेति परगासु करि
होइ दइआलु मिलै गलि लावै।
संत अनंत न भेदु गणावै।।१०।।

भक्त जैदेव जी के बारे में भक्त कबीर जी के वचन हैं :

इसु मन कउ कोई खोजहु भाई।।
तन छूटे मनु कहा समाई।।४।।
गुर परसादी जैदेउ नामां।।
भगति कै प्रेमि इन ही है जानां।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३०)

भावार्थ : भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे भाई ! कोई इस मन की भी खोज करो कि यह मन शरीर से बिछड़ कर, कहाँ जाकर टिकता है। सतिगुरु की कृपा से भक्त जैदेव जी व भक्त नामदेव जी जैसे भक्तों ने प्रेम-भक्ति करके इस रहस्य को जान लिया है।

श्री गुरु रामदास जी के पावन वचन हैं :

नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति
रविदासु चमिआरु चमईआ।।
जो जो मिलै साधू जन संगति
धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३५)

भावार्थ : हे भाई ! भक्त नामदेव जी, भक्त

जैदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, तथाकथित नीची जाति वाले भक्त रविदास जी और भक्त धंना जी एवं भक्त सैण जी, जो भी इन संत-जनों की संगति में आता गया, वह भाग्यशाली बनता गया तथा दयालु अकाल पुरख के साथ मिलता गया।

भट्ट कल जी सवैयों में भक्त जैदेव जी के बारे में कहते हैं :

गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन।।
नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९०)

भावार्थ : भट्ट कल जी कहते हैं कि भक्त रविदास जी, भक्त जैदेव जी तथा भक्त त्रिलोचन जी अकाल पुरख के गुण गा रहे हैं। इसी प्रकार भक्त नामदेव जी व भक्त कबीर जी भी सदैव उस समदृष्टा अकाल पुरख के गुण गा रहे हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त जैदेव जी के कुल दो शबद शोभायमान हैं। एक शबद राग गूजरी में है और दूसरा राग मारू में है। इन शबदों में भक्त जैदेव जी हमारे लिए क्या उपदेश कर रहे हैं, आइए, विचार करते हैं!

भक्त जैदेव जी द्वारा रागु गूजरी में उच्चरित शबद का केन्द्रीय भाव इस प्रकार है :

केवल राम नाम मनोरमं।।
बदि अंम्रित तत मइअं।।
न दनोति जसमरणेन
जनम जराधि मरण भइअं।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२६)

भावार्थ : हे भाई! केवल परमात्मा के सुन्दर नाम का सुमिरन कर, जो कि अमृत से भरपूर है और जो वास्तविकता का स्वरूप है, जिसके सुमिरन द्वारा जन्म-मरण, बुढ़ापा, चिन्ता और मौत का भय दुखित नहीं करता।

नोट : भक्त जैदेव जी द्वारा उच्चरित इस शबद का उच्चारण करना साधआरण पाठक के लिए थोड़ा कठिन है, इसलिए साधारणतया जब किसी गुरुद्वारा साहिब में किसी ग्रंथी सिंघ अथवा पाठी सिंघ की नियुक्ति करनी होती है तो प्रबंधक व विद्वान सज्जन, उस व्यक्ति से इस शबद का उच्चारण करवा कर देखते हैं कि उस व्यक्ति ने गुरबाणी की संथा (गुरबाणी का सही उच्चारण करने की शिक्षा) ली है या नहीं।

भक्त जैदेव जी द्वारा रागु मारू में उच्चरित शबद का केन्द्रीय भाव इस प्रकार है :

मन आदि गुण आदि वखाणिआ।।
तेरी दुबिधा द्रिसटि संमानिआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०६)

भावार्थ : हे मन! संसार के मूल प्रभु अर्थात् अकाल पुरख की उपमा गायन करने से तेरा भेदभाव वाला स्वभाव तथा दुविधा दूर हो गए हैं।

इस प्रकार से, भक्त जैदेव जी इन दोनों शब्दों में हमें उस निराकार व निर्गुण अकाल पुरख की बंदगी करने की प्रेरणा करते हैं।

अपने अंतिम समय में भक्त जैदेव जी ने केंदुली नगर, जिला बीरभूम में निवास किया। आप जी सन् १२७३ ई. में अकाल प्रस्थान कर गए।

दशम गुरु जी का मूल्य-दर्शन

-डॉ. वजीर सिंघ (दिवंगत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता को साहित्य का अमीर भंडार, कोम-निर्माण के मूल आधार और असीम जीवन-मूल्यों से भरपूर रिवायतों की विरासत प्रदान की। गुरु साहिब की बाणी-रचना और उनकी सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक-आध्यात्मिक क्षेत्र को दिए गए योगदान को मुख्य रखते हुए जीवन-मूल्यों के कई-एक सिलसिले रचे जा सकते हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा और भविष्य की पीढ़ियों को प्रदत्त रहमतों का अनुमान लगाना संभव है। उनकी बाणी में प्रस्तुत जीवन-मूल्यों का घेरा इतना विशाल है कि इसमें अकाल पुरख से लेकर मानव स्वाभिमान और सामाजिक उपकारों से सम्बन्धित अनेक विषय शामिल हैं। हस्तसात् अध्ययन में दस चुनिंदा जीवन-मूल्यों की विचार प्रस्तुत है :—

१. अकाल : दशम गुरु जी ने अनगिनत स्वरूपों वाली शिरोमणि हस्ती को 'अकाल' की संज्ञा दी है। परम सत् के जितने भी नाम हम लेते हैं, वे उच्चतम सत्यता के कृत्रिम या कर्म नाम हैं, जो उसकी रचना के विभिन्न प्रकटीकरण के संकेत होते हैं। बुनियादी हकीकत नाम-रहित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्पष्ट रूप से इसे 'अनामे' कहा है। फिर भी, उन्होंने चक्कर-चिह्न से रहित अकाल हस्ती को अनेक नामों द्वारा संबोधित किया है, जो उनके शाश्वत सत्य के फलसफे और काल-चिंतन को प्रकट करते हैं। गुरु साहिब की बाणी में परमात्मा 'काल' भी है, 'काल-रहित' भी है। काल और अकाल के प्रतीक के बिना उन्होंने 'महाकाल' और 'सर्व-काल' शब्द भी इस्तेमाल किए हैं, जो विश्व-रचना से अगोचर और घटनाओं से भरपूर, समय से निर्लिप्त हस्ती के सूचक हैं। उनका अकाल कोई निर्जीव या स्थिर वजूद नहीं, बल्कि यह समूचे ब्रह्मांड का आत्मिक आधार है। दृष्टमान जगत आत्मा में से उत्पन्न होता है और आत्मा ही जगत में व्यापक है। गुरबाणी के अनुसार निरंकार, संसार की रचना किए जा रहा है। अकाल पुरख की शक्ति स्थापना और पुनर्सृजना करती रहती है, इसका कोई अंत नहीं।

२. कृपालु : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी पहली नमस्कार अकाल को की है और फिर कृपालु का सुमिरन किया है, जो मेहरबान, कृपा-स्वरूप दाता है। शाश्वत, निराकार, अनन्त हस्ती गुण-अतीत है, परन्तु यह कोई सुन्न-मसुन्न, खालीपन नहीं। अकाल का आंतरिक केंद्र उसकी रचनात्मिकता है। इस अकाली नियम द्वारा वह काल-रहित हस्ती निर्गुण से सगुण में पलट जाती है, अफुर स्थिति से सफुर अवस्था धारण कर लेती है। अपने सगुण स्वरूप में निर्गुण ब्रह्म 'दैवी पुरुष' के गुण-लक्षण धारण कर, प्रेमपुंज ईश्वर और भक्तजन का प्रभु

बन जाता है। अंतिम हस्ती 'यह' (पदार्थ) से 'वह' (चेतन) में पलट जाती है, जिसके पुरखी स्वरूप के साथ आत्मिक संपर्क संकल्पित और स्थापित किया जाता है। इसी मेहरबान, भक्त-वत्सल प्रभु का अभिवादन करते हुए उसे कृपालु कहा है, जो दाता रूप में अपनी रचना को देखकर आनन्दित हो रहा है। जो प्रेम और संग-साथ का दर्द मानवीय हृदय में व्याप्त है, वह 'प्रेम' के दैवी मूल्य में से ही उत्पन्न होता है।

३. शूरवीरता : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अकाल 'सर्वलोह' है, जो कि गुरु साहिब की संकल्पना के बहादुर नायकों का प्रतीक बन कर व्यक्त हुआ। सिक्ख परंपरा दैवी पुरुष के हठीले सर्वलोह पक्ष से प्रेरित, बहादुरी तथा शौर्य के रंग में रंगी हुई है। श्री गुरु नानक साहिब ने शूरवीर नायक के लिए योद्धा-महाबली-सूरमा की शब्दावली इस्तेमाल की थी। दशम गुरु जी ने अपने पैरोकारों में बहादुर योद्धा, अपराजित सैनिक और संत-सिपाही की स्प्रिट भरने का प्रयास किया। इस सैनिक को बदी-बुराई का नाश करने का और भले लोगों की सुरक्षा हेतु लड़ने का प्रशिक्षण दिया गया। गुरु साहिब ने 'घोड़ा' और 'बाज़' (जो नीला घोड़ा और सफ़ेद बाज़ के कारण प्रसिद्ध हैं) को शक्ति के प्रतीक के रूप में अपनाया। अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की स्थापित की मीरी-पीरी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, दशम गुरु जी ने शाही किस्म के वस्त्र, कलगी आदि धारण किये और साथ ही अपने सिक्खों को आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते रहे। यह समूचा प्रयास दैवी पुरुष के सर्वलोह वाले शूरवीर पक्ष को गुरु साहिब का अनुपम सहारा था।

४. प्रबुद्धता : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी रचना में शिक्षा के प्रकाश और बुद्धिमत्ता पर जो बल विद्यमान है, वह उन्हें बुद्धि-विवेक का विशेष समर्थक सिद्ध करता है। 'क्रिशनावतार' के एक पदे में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में उच्चारण किया है कि अज्ञान का कूड़ा-करकट शिक्षा और ज्ञानवानता की बुहारी (झाड़ू) के द्वारा साफ करने की अवश्यकता है। स्पष्ट है कि ज्ञान से सम्बन्धित उनका हवाला आध्यात्मिक बोध का संकेत देता है, न कि छोटी-मोटी जानकारी का। गुरबाणी में बार-बार जिस बुद्धि-विवेक की बात की है, उससे स्पष्ट तात्पर्य है अच्छे और बुरे में, उचित और अनुचित में अंतर करने की योग्यता। यह तथ्य जीवन में विवेकशीलता का प्रयोग,'मन नीवां मति उच्ची' के संयम का समर्थन करता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वहम-परस्ती और हठधर्मिता, रूढ़िवाद व खंड-वृत्ति के विरुद्ध जेहाद आरंभ किया। उन्होंने ज़िंदगी के सच्चे तत्व और शुद्ध जीवन की भी खोज हेतु आसक्ति का साधन अपनाने की सिफ़ारिश की। गुरु साहिब ने स्वयं भी बहुआकारी बाणी-रचना की और अपने निकटवर्ती प्रबुद्ध व्यक्तियों को भी भारतीय परंपरा में से चुनिंदा एवं बहुमूल्य अध्यायों का अनुवाद करने की प्रेरणा की, ताकि लोक-मन को सुशिक्षित किया जा सके। ये तथ्य गुरु साहिब की बुद्धिमत्ता की और साहित्य में प्राप्त आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों से सम्बन्धित

सुचेतना का अकाट्य प्रमाण हैं।

५. संतुलित जीवन : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की समूची जीवन-शैली संतुलन के मूल्य की गवाही भरती है— प्रबुद्धता और अमल के मध्य, भक्ति और शक्ति के मध्य संतुलन। उनके जीवन का लक्ष्य 'संत उबारन', 'दुषट निवारण' था। सर्वशक्तिमान से जो आशीर्वाद उन्होंने माँगा, वह 'शुभ करमन' की योग्यता थी। यह बात स्पष्ट करती है कि वे सदाचार को जीवन में कितनी महत्ता देते थे। सद्गुणों वाला नेक व्यक्ति लोभ-लालच के वश में नहीं आता। वह सांसारिक जीवन गुजारता हुआ गृहस्थ के कर्त्तव्य निभाता है और फिर भी निर्पेक्षता की भावना का धारक बना रहता है। गुरु साहिब की बाणी मुश्किल घड़ी में भी चढ़दी कला बनाए रखने का बल प्रदान करती हैं। उन्होंने न केवल मानवीय जीवन में त्याग और सुख-स्नेह के मध्य, बल्कि दैवी पुरुष से सम्बन्धित अपने दृष्टिकोण में अगोचर और व्यापक का संयोग स्थापित किया। शिरोमणि हकीकत को वे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के नाम देते हैं। परम सत् को गुण-भरपूर होते हुए भी, गुण-रहित दरसाया है। वह अनेक है, फिर भी एक है। इस प्रकार का संतुलन गुरु साहिब की विचारधारा और शैली का रोचक प्रमाण है।

६. लोकतांत्रिक भावना : राष्ट्र और लोकतंत्र के आधुनिक संकल्प ज्यादा पुराने नहीं। गुरु-काल में अभी न राष्ट्र-राज, न ही राजसी भाव वाले लोकतंत्र को मान्यता मिली थी। श्री गुरु नानक साहिब ने 'संगत' और 'पंगत' संस्थाओं की आधारशिला रखी, जिन्हें डॉ. गंडा सिंघ ने गुरु साहिब की शिक्षाओं को प्रमाणित करने और व्यावहारिक रूप प्रदान करने वाली 'प्रयोगशालाएं' कहा है। दशम गुरु जी ने इन संस्थाओं को दृढ़ता प्रदान की। उन्होंने संगत रूपी सभा को आधुनिक साधारण सभा का अग्रणी रूप प्रदान किया, जिसकी कार्यकारी कौंसिल 'पाँच प्यारों' के रूप में विद्यमान थी। सिक्ख भाईचारे के जीवन में लोकतांत्रिक भावना और भी प्रफुल्लित हुई, जब 'गुरमते' के रूप में प्रस्तुत प्रस्तावों को विचाराधीन लाकर या सर्वसम्मति के साथ या बहुसम्मति के साथ स्वीकार किया जाने लगा। यह सारी क्रिया सर्वशक्तिमान के नाम निभाई जाती है। सारी सफलता वाहिगुरु की फ़तह है। सभी बख्शिशों और नियामतों का आनंद 'बाँट कर छकने' की भावना के साथ लिया जाता हैं। सामाजिक कल्याण के कार्यों हेतु इच्छित योगदान देने के लिए गुरु साहिब ने सिक्ख संगत को निर्देश जारी किये। 'प्रेम सुमार्ग' के कर्ता के अनुसार, ''ख़ालसा-जीवन का एक विशेष चिह्न, सामाजिक न्याय के रूप में प्रमुख सद्गुण बन कर उभरा, जो कि सिक्ख समाज की लोकतांत्रिक भावना की गवाही भरता है।''

७. समानता : लोकतंत्र के श्रेष्ठ जीवन-मूल्य के रूप में और मानवाधिकारों से प्रमुख, समानता (बराबरी) को अकादमिक व साहित्यिक क्षेत्र में सदा आदरणीय स्थान मिला है, मगर व्यावहारिक रूप से विशेषतया भारत में, समानता घाटे का सौदा ही रही है। भक्ति

आंदोलन ने तथाकथित निम्न जाति के लोगों को मन्दिर में दाख़िल होने और धर्म-ग्रंथों के अध्ययन के संबंध में लगी पाबंदियों के विरुद्ध रोश प्रकट किया। श्री गुरु नानक साहिब ने जात-पांत को प्रारंभ से ही ख़त्म करने का बीड़ा उठाया और समूची मानवता की समानता को स्वीकार किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसे की साजना कर असमानता को अलविदा ही कह दिया। श्रीमती वायलम के शब्दों में, ''गुरु साहिब का विश्वास था कि प्रत्येक इंसान को संसार में, बिना भेदभाव के, भौतिक और आत्मिक स्तर पर प्रगति करने का अधिकार प्राप्त है।'' दशम गुरु जी को, न केवल उनकी बाणी-रचना के आधार पर, बल्कि जत्थेबन्दक सफलतायों के कारण भी, समानता का सिरमौर समर्थक एलान किया जाता है। उनकी देखरेख में उच्च वर्ण-जाति का घमंड, लिंगक पक्षपात और व्यावसायिक ऊंच-नीच को तिलांजलि दे दी गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सर्वमानवता की समानता वाली दृष्टि को, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के सुखदायक भविष्य के लिए संभावी कार्य-सूची में शामिल कर लेना उचित और न्यायशील होगा।

८. भाईचारा : स्वतंत्रता और समानता के लोकतांत्रिक मूल्य आवश्यक रूप से 'भाईचारे' के मूल्य को निश्चित करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानव के गौरव और ज़मीर की आज़ादी का समर्थन किया है। उन्होंने 'अकाल उसतत' बाणी में अनेक धर्म-सम्प्रदायों और मतों का वर्णन किया, जो कल्याण-प्राप्ति हेतु भिन्न-भिन्न मार्ग निर्धारित करते हैं। व्यक्ति के सांस्कृतिक वातावरण पर निर्भर है कि वह कौन-सा पंथ या मार्ग अपनाता है। फिर भी, सभी मानवीय जीव एक-समान मानव हैं। गुरु साहिब धर्म-संप्रदायों और वर्णों के विरोधी नहीं, मगर वे सांप्रदायिक विचारधारा के आलोचक अवश्य हैं। यदि हम स्वतंत्रता और समानता के समर्थक हैं, तो भाईचारे की भावना से मुनकर नहीं हो सकते। अगर किसी समाज में भाईबंदी के भाव का अभाव है तो यह स्पष्ट संकेत है कि सामाजिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग हो रहा है और समानता आलोप है। गुरु साहिब का पक्का निश्चय है कि सभी मानव भाई-भाई हैं। ख़ालसा पंथ की साजना मानवीय भाईचारे की उचित पहचान, इसके प्रेम-भाव और एकता को प्रमाणित करने हेतु हुई है। गुरु साहिब की नीति का सांस्कृतिक प्रभाव इस तथ्य से स्पष्ट है कि उनके पैरोकार उनकी शिक्षाओं और उपदेशों को पूर्ण विश्वास के साथ सही और दुरुस्त मान कर चलते हैं। गुरु साहिब ने ख़ालसा बिरादरी के व्यक्तियों में आपसी प्रेम-प्यार और वफ़ा के गुणों का संचार किया। कोई भी भाईचारा प्रेम के बिना तुच्छ और बेकार है तथा एक दूसरे के प्रति वफ़ा से विहीन और अर्थहीन है।

९. विश्वबंधुत्व की भावना : प्रत्येक व्यक्ति मानव जीव के रूप में बेशक निराला है, फिर भी वह, पुरुष या स्त्री, किसी सामाजिक संगठन की ईकाई है, चाहे यह कुटुंब के स्तर का समाज हो, चाहे कोई अन्य समूह या कौम हो। श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जीव की संरचना वाले अद्वितीय और विश्वबंधुत्व की तत्वों से सम्बन्धित पूरी सचेत हैं। गुरु साहिब के सिक्ख से आशा की जाती है कि वह अपने निजी कल्याण हेतु संतवृत्ति के गुणों का धारक हो, परन्तु साथ ही वह संयम-भरपूर नागरिक के कर्त्तव्य भी निभाए, सेवा-भावना-संगठन का सिपाही हो, निहत्थे और मज़लूमों से सुरक्षा के लिए तत्पर रहे। मानव भाईचारे के समर्थक होने के नाते, वह अपने संग-साथ के हितैषी, हमवतनी, देशवासियों के लिए स्नेह-भरपूर हो। गुरु साहिब इससे भी आगे, सिक्ख को समूची मानव जाति के साथ एकजुटता की भावना ग्रहण करवाते हैं। राष्ट्रवाद से आगे वे मानववाद की दिशा अपना लेते हैं। गुरु-काल में राष्ट्रीय हदबन्दियां इतनी सख़्ती के साथ निश्चित नहीं थी, न ही मुल्कों के दरमियान जानलेवा मुकाबला चलता था। आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण में काफ़ी हद तक उदारता और मानववादी भावना विद्यमान थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सहनशीलता और परस्पर उदारता की स्प्रिट को उत्तेजित किया। उन्होंने सिक्ख कौम में विश्वबंधुत्व की दृष्टि के विकास को उत्साह दिया। इस समूचे प्रयत्न की दिशा किसी स्वस्थ अंतर-राष्ट्रवाद के लिए विशुद्ध बुनियाद स्थापित करना था। आधुनिक मानव-जाति दशम गुरु जी के इस एलान की भावना ग्रहण कर लाभप्रद हो सकती है :

. . . मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो ।।

(अकाल उसतत)

१०. अमन-शान्ति : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्वाधीन सिक्खों ने अमनपसन्दी का रास्ता चुन लिया, परन्तु किसी सैद्धांतिक अमनवाद या शांतमयी संप्रदाय के अनुसारक नहीं बने। गुरु साहिब ने कृपाण, खड़क आदि शस्त्रों को जो महानता प्रदान की, वह एक तो सर्वशक्तिमान और शूरवीरता के पक्ष को उजागर करने हेतु किया गया और दूसरा, अपने पैरोकारों को बहादुरी की प्रेरणा देने हेतु। गुरु जी की बाणी में मिथिहास का प्रयोग प्रतीकमयी है। यह दुष्टों और अत्याचारियों के दमन की तरफ संकेत है ताकि विश्व को अमन-चैन और एकसुरता वाला निवास-स्थान बनाया जा सके। उनका मानव के साझे विरसे में और मानव-जाति की समूची बुद्धिमत्ता में गहरा विश्वास था। वे श्री गुरु नानक साहिब के मिशन की पूर्ति के लिए कार्य कर रहे थे। सिक्ख भाईचारे की अमनपसन्दी का एक बलवान पक्ष गुरु साहिबान द्वारा और सिक्खी सिद्धांत परंपरा द्वारा महिलाओं को मान-सम्मान का स्थान देना है। सिक्ख समाज ने कभी भी जंग-युद्ध की शान को अपना नारा नहीं बनाया, बेशक मुश्किल हालात में हथियार का उपयोग न्यायशील और आधिकारिक माना गया है। गुरु साहिब की बाणी धरती को बहु-रंगी, बहु-नसली जीवन के आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है। सिक्ख संगत की सामूहिक अरदास 'तेरे भाणे सरबत्त दा भला' के शब्दों के साथ सम्पन्न होती है।

तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब से सम्बंधित एक अहम पंथक दस्तावेज़

*-स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा) **

''गंगा में से उठी लहर गोदावरी में समाई।'' ये शब्द कलगीधर पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन-काल के सफ़र को बयान करते हैं। गंगा तट के कदीमी शहर पटना साहिब में सतिगुरु जी का प्रकाश हुआ और गोदावरी के तट पर श्री हजूर साहिब में ज्योति-जोत समाए। पंजाब में सतलुज के किनारे आपका कर्म-क्षेत्र रहा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से सम्बन्धित दो तख़्त— तख़्त श्री पटना साहिब और तख़्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़ पंजाब से बाहर, बिहार और महाराष्ट्र में स्थित हैं। प्रत्येक सिक्ख अपनी अरदास में इन पवित्र तख़्त साहिबान को याद करता है। केवल दर्शन-दीदार के साथ ही कौमी कर्त्तव्य पूरे नहीं होते।

अलामा इकबाल ने एक बार लिखा था, ''मुल्ला को जो है हिंद में सिजदे की इजाज़त। नादां यह समझता है कि इसलाम है आज़ाद।'' बात केवल दर्शन-दीदार तक ही महदूद नहीं होती बल्कि कौमी अरदास का हिस्सा है, गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का दान खालसा जी को मिले। यह माँग और विनती भी पूरी होती नज़र नहीं आती।

पटना साहिब को सिक्ख पंथ का 'पालना' भी कहा जाता है। इस पवित्र नगरी को श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु तेग़ बहादर जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से सम्बन्धित होने का गौरव प्राप्त है। इसी के अलावा गुरु साहिबान ने यहाँ की संगत के नाम ख़ास हुकमनामे भेज कर संगत को कृतार्थ किया। गुरु साहिब जी के पवित्र शस्त्र तथा अन्य यादचिन्ह यहाँ सुरक्षित हैं, इसलिए यहाँ का प्रबंध संभालना खालसा जी का अधिकार भी है और कर्त्तव्य भी है।

केवल तख़्त श्री पटना साहिब के प्रबंधकीय हवाले के माध्यम से बात करें तो इसका अपना बहुत पुराना इतिहास है। मौजूदा निज़ाम में यह हिंदू रिलीजिस एन्डोमेंट एक्ट के अधीन है। इसमें प्रबंधक समिति के कुल १५ सदस्य हैं। यह हाऊस चुनाव, नामज़दगी और को-आप्शन के साथ पूरा होता है। इसमें मुख्य नुक्ता यह है कि चुनाव और सिक्ख संस्थाओं के माध्यम से ११ सदस्य आते हैं। अब इसमें डिस्ट्रिक्ट जज, पटना तीन सदस्य अपनी तरफ से नामज़द करता है। इस प्रकार हाऊस के १४ सदस्य हो जाते हैं। अब ये १४ सदस्य मिलकर एक सदस्य को-आप्ट करते हैं। इस तरह देखा जा सकता है कि प्रबंधक समिति बनाने में

**New Jersy, USA, Ph : +1 973 699 0950, E-Mail: Santsipahi@Gmail.com*

डिस्ट्रिक्ट जज, पटना की प्रभावशाली भूमिका होती है। इतना ही नहीं, कोई भी सदस्य चुने जाने या नामज़द होने के बावजूद सदस्य तभी माना जायेगा जब डिस्ट्रिक्ट जज, पटना उसकी स्वीकृति प्रदान करेगा। इस प्रकार प्रबंध में सरकारी हस्तक्षेप की स्थापना बहुत गहरी हो जाती है। इसके अलावा भी प्रबंधक मामलों में डिस्ट्रिक्ट जज के अधिकार इसे सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त नहीं करते और प्रबंध को केवल पंथक रूप देने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पटना साहिब के संविधान और चुनाव के नियमों को जब पढ़ा जाता है तो एक सुखद मद नज़र आती है कि चुनाव में भाग लेने वाले सदस्यों तक ही नहीं, बल्कि मतदाता बनने के लिए भी अमृतधारी होना लाज़िमी है। जब कोई मद कानून का हिस्सा बन जाये तो फिर लागू करवाने वाला चाहिए, यह लागू भी हो जाती है। पटना साहिब चुनाव के दौरान पाँच धनाढ्य और आदरणीय सज्जन, जो बाद में प्रबंधक समिति में आना चाहते थे, परन्तु वे अमृतधारी होना तो दूर की बात है, पतित और तनखाहीए थे। उनके मतदाता फार्म पर बाकायदा एतराज़ दर्ज कर दिया गया। चुनाव आयुक्त सरदार गुरदेव सिंघ (ग्रेवाल) आईएएस थे। बाकायदा सुनवाई हुई और उनके नाम मतदाता सूची में से ही काट दिए गए। गुरुद्वारा प्रबंध में सुधार के लिए यह अति महत्वपूर्ण है।

यह सही है कि तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के संविधान की धारा ७९ में भी स्पष्ट ढंग से अंकित किया गया है कि धार्मिक मामलों में श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्णय अंतिम है।

Dispute relating to religious matter: 79. If any dispute relating to relgious matters other than Existing Maryada, Rituals and Doctrines, of the Gurdwara arises, the Committee shall refere the same to Sri Akal Takht Sahib, Amritsar, whose opinion shall be final. This, however, will not act as bar to the filing of any regular petition in the court of the District Judge, Patna, in this connection under the Religious Endowments Act (ActXX of 1863) [Article79 of Constitution and By-laws of Takhat Sri Harimandir ji, Patna Sahib)

इस धारा की व्याख्या में न जाते हुए स्पष्ट है कि धार्मिक मामलों में श्री अकाल तख़्त साहिब को परामर्श देने के अधिकार के बावजूद मामला पुनः अदालतों के चक्कर में डाला जा सकता है। यह केवल अंदेशा ही नहीं, बल्कि ज़मीनी हकीकत है कि तख़्त साहिब और इसके अधीन शैक्षणिक संस्थाओं के मुकद्दमे अदालतों में ले जाए जाते रहे हैं, जिससे गुरु की गोलक और सिक्ख मानसिकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

इस पृष्ठभूमि में १३ फरवरी, १९७७ ई. को सिंघ साहिब जत्थेदार साधू सिंघ भौरा, जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब की अध्यक्षता

में तख़्त श्री पटना साहिब में एक पंथक कनवेन्शन हुई। इसमें पटना साहिब के हेॅड ग्रंथी भाई साहिब भाई मान सिंघ जी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हेॅड ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी चेत सिंघ जी, संत करतार सिंघ जी तथा अन्य प्रसिद्ध हस्तियाँ शामिल हुईं और एलान किया गया कि पटना साहिब के प्रबंध में किसी भी किस्म का सरकारी दख़ल सहन नहीं किया जाएगा। इस अहम निर्णय की पैरवी या कार्यवाही नहीं हुई, जैसे हमारी लापरवाही की हालत है। इस पंथक कनवेन्शन के गुरमते की फ़ोटो कापी लेख के अंत में दी गई है।

इस कनवेन्शन में पारित किये गए प्रस्ताव कोई सामयिक नहीं हैं। यह एक पंथक दस्तावेज़ है। इसकी इबारत इस प्रकार है: —

१३/२/७७ – जत्थेदार साधू सिंघ जी भौरा, जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब श्री अमृतसर साहिब की अध्यक्षता में हुई आज की यह कनवेन्शन बड़े ही पुरज़ोर शब्दों के साथ प्रकट करती है कि सिक्ख गुरुद्वारों तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं का प्रबंध करने का अधिकार केवल कौम के प्रतिनिधियों को ही है और इसके मुताबिक तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के प्रबंध का पूरा और निरोल अधिकार केवल सिक्खों की नुमाइंदा कमेटी को ही है। यह कनवेन्शन प्रत्येक सम्बन्धित अधिकारी को स्पष्ट तौर पर प्रकट कर देना चाहती है कि सिक्ख कौम सरकारी या किसी अन्य प्रकार का बाहरी हस्तक्षेप तख़्त साहिब के प्रबंध में कतई बरदाश्त नहीं करेगी और आज की यह कनवेन्शन सर्वसम्मति के साथ स्वीकार करती है कि तख़्त साहिब के मौजूदा विधान को बदले हुए समय के अनुसार इस प्रकार तरमीम किया जाये कि तख़्त साहिब का प्रबंध केवल सिक्ख कौम के नुमायंदों के द्वारा ही किया जा सके और इसमें किसी किस्म का सरकारी या कोई बाहरी हस्तक्षेप होने की संभावना ही ख़त्म हो जाये। इस उद्देश्य के लिए, प्रबंधक समिति द्वारा तख़्त श्री हरिमंदर जी की सभा— तारीख़ ६–२–७७ को कांस्टीट्यूशन उप–समिति बनाए जाने की प्रौढ़ता की जाती है और तख़्त साहिब के विधान के उपरोक्त फ़ैसले के अनुसार तरमीम के लिए अपेक्षित कार्रवाई करने के लिए उक्त समिति को पूर्ण अधिकार प्रदान किए जाते हैं।

इस कनवेन्शन में यह भी स्वीकार हुआ कि निम्नलिखित सदस्यों का एक वफद बनाया जाये :

१. स. जोगिंदर सिंघ योगी , कनवीनर
२. स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)
३. स. हरसेव सिंघ धूपिया
४. स. बखशीश सिंघ (ढिल्लों)
५. स.कर्नल डी.एस. गुमानपुरी
६. स. मौलीशवर प्रसादि सिंघ
७. स. हरचरन सिंघ (बिंदरा)
८. स. प्रीतम सिंघ (सोही)
९. स. बाबा जसवंत सिंघ

और इस वफद को अधिकार दिए गए कि इसके सदस्य डिस्ट्रिक्ट जज पटना, राज्यपाल बिहार सरकार, मुख्यमंत्री बिहार सरकार और सम्बन्धित अधिकारियों से मिल कर इस कनवेन्शन के फ़ैसले से अवगत करवाएं।

Grams : "TAKHATSAHEB" Phone : 41831 42000

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਸ੍ਰੀ ਤਖ਼ਤ ਹਰਿਮੰਦਿਰ ਜੀ, ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ

PRABANDHAK COMMITTEE

(Birth Place of Sri Guru Gobind Singh Ji Maharaj)

SRI TAKHT HARIMANDIR JI, PATNA SAHEB

Ref. No.

PATNA SAHEB/CITY

Dated ੧੩/੨/੭੭ 197

ਗਿਆਨੀ ਸਾਧੂ ਸਿੰਘ ਜੀ ਭੌਰਾ, ਜਥੇਦਾਰ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਹੋਈ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਇਹ ਕਨਵੈਨਸ਼ਨ ਬੜੇ ਹੀ ਪੁਰਜ਼ੋਰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਸਿੱਖ ਗੁਰਧਾਮਾਂ ਤੇ ਹੋਰ ਧਾਰਮਿਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਕੇਵਲ ਕੌਮ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਇਸ ਮੁਤਾਬਿਕ ਤਖ਼ਤ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਮੰਦਰ ਜੀ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦਾ [illegible] ਪੂਰਾ ਅਤੇ ਨਿਰੋਲ ਅਧਿਕਾਰ ਕੇਵਲ [illegible] ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਨੁਮਾਇੰਦਾ ਕਮੇਟੀ ਨੂੰ ਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਨਵੈਨਸ਼ਨ ਹਰ ਸੰਬੰਧਿਤ ਅਧਿਕਾਰੀ ਨੂੰ ਸਪੱਸ਼ਟ ਤੌਰ ਤੇ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਸਿੱਖ ਕੌਮ ਸਰਕਾਰੀ ਜਾਂ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ [illegible] ਬਾਹਰਲੀ ਮੁਦਾਖ਼ਲਤ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿਚ ਕਦਾਚਿਤ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗੀ ਅਤੇ

ਅਜ ਦੀ ਇਹ ਕਨਵੈਨਸ਼ਨ ਸਰਬ ਸੰਮਤੀ ਨਾਲ ਪ੍ਰਵਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਮੌਜੂਦਾ ਵਿਧਾਨ ਨੂੰ ਬਦਲ ਕੇ ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਤਰਮੀਮ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਕਿ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਰੋਲ ਸਿੱਖ ਕੌਮ ਦੇ ਨੁਮਾਇੰਦਿਆਂ ਰਾਹੀਂ ਹੀ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦੀ ਸਰਕਾਰੀ ਜਾਂ ਹੋਰ ਬਾਹਰਲੀ ਮੁਦਾਖ਼ਲਤ ਹੋਣ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਹੀ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਵੇ। ਇਸ ਮਤਲਬ ਲਈ, ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ, ਤਖ਼ਤ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਮੰਦਰ ਜੀ ਦਾ ਇਜਲਾਸ ਮਿਤੀ ੬-੨-੭੭ ਵਿਚ [illegible] ਕਾਂਸਟੀਚੂਐਂਟ ਸਬ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਏ ਜਾਣ ਦੀ ਪ੍ਰੋੜਤਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਵਿਧਾਨ ਦੀ ਉਪਰੋਕਤ ਸੋਧ ਅਨੁਸਾਰ ਤਰਮੀਮ ਲਈ ਲੋੜੀਂਦੀ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰਨ ਲਈ ਉਕਤ ਕਮੇਟੀ ਨੂੰ ਪੂਰੇ ਪੂਰੇ ਅਧਿਕਾਰ ਦਿੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਇਸ ਕਨਵੈਨਸ਼ਨ ਵਿਚ ਇਹ ਵੀ ਪ੍ਰਵਾਨ ਹੋਇਆ ਕਿ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੀ ਇਹ ~~ਸਬ ਕਮੇਟੀ~~ ਬਣਾਈ ਜਾਵੇ:-

੧- ਸ੍ਰ: ਜੋਗਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸੋਢੀ, ਕਨਵੀਨਰ
੨- ਸ੍ਰ: ਗੁਰਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ ਲਾਂਬਾ
੩- ਸ੍ਰ: ਹਰਦੇਵ ਸਿੰਘ ਧੁਪੀਆ
੪- ਸ੍ਰ: ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਸਿੰਘ ਵਿਰਕ
੫- ਸ੍ਰ: ਕਰਨਲ ਬੀ. ਐਸ. ਕਮਾਨਦਾਰ
੬- ਸ੍ਰ: [illegible] ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਿੰਘ
੭- ਸ੍ਰ: ਹਰਚਰਨ ਸਿੰਘ [illegible]
੮- ਸ੍ਰ: ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ ਸੇਠੀ
੯- ਸ੍ਰ: [illegible] ਸਿੰਘ

(ਪਰਤੋ)

[illegible] ... ਇਸ ਰਕਮ ਤੇ ਟੈਕਸ ਦੀ ਮੁਆਫ਼ੀ ਮਿਲ ਸਕਦੀ ਹੈ। ... ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਸ੍ਰੀ ਤਖ਼ਤ ਹਰਿਮੰਦਰ ਜੀ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ ਭੇਜੀ ਜਾਵੇ।

- ੨ -

ਅਤੇ ਇਸ [illegible] ਨੂੰ ਅਧਿਕਾਰ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ [illegible] ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਜਜ ਪਟਨਾ, ਰਾਜਪਾਲ ਬਿਹਾਰ ਸਰਕਾਰ, ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਬਿਹਾਰ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਇਸ ਕਨਵੈਨਸ਼ਨ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾਏ।

ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਕਰਤਾ:—

[illegible]

੨੩.੨.੭੭

ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ

[illegible]

੨੪-੨-੭੭

ਸਮਰਥਨ ਕਰਤਾ:—

[illegible]

੨੩.੨.੭੭

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा विरचित 'चंडी की वार' की सृजन-प्रक्रिया

*- डॉ. आत्मा सिंघ**

सिक्ख धर्म का आरंभ श्री गुरु नानक देव जी के साथ हुआ और इसकी पराकाष्ठा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना के साथ की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक आते-आते सिक्ख धर्म कई पड़ाव से गुज़र चुका था। ऐतिहासिक संदर्भ में अब ज़रूरत थी विलक्षण पहचान और स्थाप्ति की, जो हुकूमत के साथ टक्कर लेने के बिना संभव नहीं थी। श्री गुरु तेग़ बहादर जी की शहादत के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भेंट के रूप में शस्त्र, घोड़ों तथा अन्य जंगी सामान को विशेष महत्व दिया तथा सिक्खों को जंगी प्रशिक्षण देना शुरू किया। कुछ समय के लिए आप नाहन के राजा के निमंत्रण पर पाउंटा साहिब जा ठहरे, जहाँ सैनिक प्रशिक्षण के साथ-साथ जज़्बों को उभारने के लिए आपने साहित्य-सृजन भी करवाया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में ५२ कवि थे, जिनमें कवि उदे राय, कवि बिंदू राय, कवि अमृत राय, कवि अल्ल, कवि आसा सिंघ, कवि आलिम, कवि ईसर दास, कवि सुखदेव, कवि सुक्खा सिंघ, कवि सुखिया, कवि सुदामा, कवि सैनापति, कवि स्याम, कवि हुसैन अली, कवि हीर भट्ट, कवि हंसराम, कवि कुल, कवि कुरवेश, कवि खानचन्द, कवि गुणिया, कवि गुरदास, कवि गोपाल, कवि चंदन, कवि चंदा, कवि जमाल, कवि टहकन, कवि धरम सिंघ, कवि धन्ना सिंघ, कवि ध्यान सिंघ, कवि ननूआ, कवि निश्चल दास, कवि निहाल चंद, कवि नंद सिंघ, कवि नंद लाल, कवि पिंडी दास, कवि बल्लभ, कवि बल्लू, कवि बिधी चंद, कवि ब्रिखा, कवि बृज लाल, कवि मथरा, कवि मदनगिरि, कवि मदन सिंघ, कवि मल्लू, कवि मानदास, कवि माला सिंघ, कवि मंगल, कवि राम, कवि रावल, कवि लक्खा, कवि रौशन सिंघ और कवि सोहन सिंघ ने वीर-रसी धार्मिक रचना की।

पाउंटा साहिब में लगभग चार वर्ष निवास करने के पश्चात् गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब लौटे। पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी को भरोसा दिलाया कि वे मुगलों के विरुद्ध गुरु जी का साथ देंगे, परन्तु जैसे ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी सेना को जत्थेबंद करना शुरू कर दिया तो पहाड़ी राजा गुरु जी के विरोध में आ गए। निष्कर्षत: भंगाणी का युद्ध हुआ और युद्धों का सिलसिला शुरू हो गया। श्री अनंदपुर साहिब में पाँच किले तैयार करवाए गए। गुरु साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब में भी साहित्य-सृजन का कार्य

*पंजाबी विभाग, बाबा अजै सिंघ कॉलेज, गुरदास नंगल, जिला गुरदासपुर। फोन : ९८७८८-८३६८०

जारी रखा और अपने सिक्खों को धर्म-युद्ध के लिए पूरी तरह से तैयार कर दिया। सिक्खों में जोश भरने के लिए 'रणजीत नगाड़ा' बनवाया गया और भावनाओं को प्रकट करने के लिए साहित्य की सृजना की, जिसमें 'चंडी की वार' और 'शसत्रनाममाला' विशेष उल्लेखनीय हैं। हर रात सिक्ख संगत उन योद्धाओं की वीर गाथाएं और वारें सुनती, जिन्होंने शस्त्र उठा कर ज़ुल्म के विरुद्ध टक्कर ली थी। इसके साथ ही श्री अनंदपुर साहिब के सिक्ख दरबार का माहौल सैनिक गतिविधियों वाला बन गया।[१]

गुरु साहिब को मुगलों के विरुद्ध अनेक युद्ध लड़ने पड़े। सिक्ख फौज़ में जोश पैदा करने के लिए गुरु साहिब ने 'चंडी की वार' की सृजना की। इस वार को 'वार श्री भगउती जी की' भी कहा जाता है। साहित्य-सृजन करने व सैनिक प्रशिक्षण के साथ-साथ गुरु जी ने सिक्खों की मानसिकता को सुदृढ़ करने और उन्हें सदा के लिए अमर बनाने के मकसद सहित सन् १६९९ ई. की बैसाखी वाले दिन ख़ालसा पंथ की सृजना की, जो दुनिया के इतिहास में एक आलौकिक घटना है।

सन् १७०३ ई. में मुग़ल सेना और पहाड़ी राजाओं ने श्री अनंदपुर साहिब को घेरे में ले लिया। कई महीने तक घेरा रहने के बावजूद उन्हें अंदर दाख़िल होने में सफलता न मिल सकी। आखिर मुग़ल फौज ने कुरान शरीफ़ और पहाड़ी राजाओं ने गाय की कसम खाकर किला खाली करवाया और विश्वासघात करते हुए गुरु जी पर हमला कर दिया। इस हमले में भारी जानी और माली नुकसान हुआ। परिवार बिछड़ गया। सारा साहित्य पानी में बह गया। छोटे साहिबज़ादे माता गुजरी जी के साथ गंगू के गाँव सहेड़ी (खेड़ी) चले गए, जिन्हें बाद में सरहिंद के नवाब ने दीवार में जिंदा चिनवा कर शहीद कर दिया। बड़े साहिबज़ादे चमकौर की जंग में शहीद हो गए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वीर-रसी बाणी, सैनिक-प्रशिक्षण और अमृत संचार द्वारा मृतप्राय भारतीय जनता को पुनर्जीवित कर दिया। आप जी द्वारा उच्चरित बाणी 'श्री दसम ग्रंथ साहिब' में दर्ज है। श्री दसम ग्रंथ साहिब में कुछ भक्ति प्रधान रचनायें हैं, कुछ पौराणिक प्रसंग हैं और बाकी चरित्र कथाएं हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पंजाबी भाषा में बड़ी रचना 'चंडी की वार' है, जिसमें चंडी की वीरता के माध्यम से सिक्खों को उत्साहित किया गया है। इसे पंजाबी की 'आदर्श वार' माना जाता है।

मारकंडे पुराण पर आधारित 'चंडी की वार' में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने फ़ौज को धर्म युद्ध के साथ जोड़ने के लिए दो शक्तिशाली मिथिहासिक पक्षों को पात्र बनाया। इस वार की कथा में दुर्गा देवी शक्तिशाली और भयंकर राक्षसों के साथ टक्कर लेती है और विजय प्राप्त करती है। बदी पर नेकी की विजय को दरसाते हुए गुरु जी ने युद्ध-वृत्तांत, युद्ध-नीति, निडरता, बहादुरी और शक्ति को दृष्टिगोचर किया है :

जंग मुसाफा बज्जिआ रण घुरे नगारे चावले।।

झूलण नेजे बैरका
नीसाण लसनि लिसावले ।।
ढोल नगारे पउण दे ऊंघन जाण जटावले ।।
दुरगा दानो डहे रण नाद
वज्जन खेतु भीहावले ।।. . . ८ ।।

'चंडी की वार' के वृत्तांत में दुर्गा और दैत्यों की बार-बार भयानक टक्कर को दरसाया गया है। महखासुर दैत्य इंद्र को पराजित कर देता है। इंद्र दुर्गा की शरण में जाता है। युद्ध होता है। दैत्य हार जाते हैं। फिर श्रवणत बीज, सुंभ निसुंभ आदि दैत्यों के साथ लड़ाई होती है। हर बार दोनों पक्ष पूरी बहादुरी के साथ लड़ते हैं :

लक्ख नगारे वज्जन आम्हो साम्हणे ।।
राकस रणो न भज्जन रोहे रोहले ।।
सीहां वांगू गज्जन सभ्भे सूरमे ।।
तणि तणि कैबर छड्डन दुरगा सामणे ।।१२ ।।

वीर-रस से भरपूर 'चंडी की वार' कलात्मिक पक्ष से भी महत्वपूर्ण है। इस 'वार' को परंपरागत छंद 'निशानी' और 'सिरखंडी' द्वारा पउड़ियों में लिखा गया है। ३२ पउड़ियों में सिरखंडी छंद, २२ पउड़ियों में निशानी छंद और एक दोहरे के रूप में वार को संपूर्ण किया है।

— *राकसि आए रोहले खेत भिड़न के चाइ ।।*
लशकन तेगां बरछीआं सूरजु नदरि न पाइ ।।[२]
— *सट्ट पई जमधाणी दलां मुकाबला ।।*
धूहि लई क्रिपाणी दुरगा मिआन ते ।।. . .१९ ।।[३]
— *दुहां कंधारां मुहि जूड़े जा सट्ट पई खरवार कउ ।।*
तक तक कैबरि दुरगसाह
तक मारे भले जुझार कउ ।।. . .४९ ।।[४]

'वार' का श्रृंगार करने के लिए उपमा, रूपक, अनुप्रास और अतिकथनी अलंकारों का खुल कर उपयोग किया गया है। उपमा अलंकार का प्रयोग 'वार की लय और रवानी को बनाए रखने के साथ-साथ इसे बेहद जोशीला बनाता है। मिसाल के तौर पर :

— *बीर परोते बरछीएं*
जण डाल चमुट्टे आवले ।।. . .
— *लोहू फाथी जाली लोथी जमधड़ी ।।*
घण विचि जिउ छंछाली तेगां हस्सीआं ।।. . .
— *डुब रतू नालहु निकली बरछी दुधारी ।।*
जाण रजादी उतरी पैन सूही सारी ।।५३ ।।

'वार' की पराकाष्ठा उस समय होती है जब अतिकथनी अलंकार का उपयोग होता है। यह अलंकार 'वार' को अति जोशीला बनाने के साथ-साथ दुर्गा के रूप में स्त्री के बाहुबल को भी दृष्टिगोचर करता है। उदाहरणतया :

चंडी राकसि खाणी वाही दैत नूं ।।
कोपर चूर चवाणी लत्थी करग लै ।।
पाखर तुरा पलाणी रड़की धरति जाइ ।।
लैदी अघा सिधाणी सिंगां धउल दिआं ।।
कूरम सिर लहिलाणी दुसमन मारि कै ।।१९ ।।

भारतीय काव्य-शास्त्र में रस सिद्धांत की ख़ास महानता है। रस के आचार्य लिखते हैं कि भाव, विभाव और संचारी-भाव से रस की उत्पत्ति होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'चंडी की वार' में विशेष तौर पर वीर रस का उपयोग किया है। इसके अलावा बाकी रसों का भी उपयोग किया है :

चोबीं धउंस बजाई दलां मुकाबला ।।

रोह भवानी आई उते राकसां।।
खब्बे दसत नचाई सीहण सार दी।।
बहुतिआं दे तन लाई कीती रंगुली।।
भाईआं मारन भाई दुरगा जाणि कै।।
रोह होइ चलाई राकसि राइ नूं।।
जम पुर दीआ पठाई लोचन धूम नूं।।२८।।

इस प्रकार गुरु जी ने 'वार' में एक तरफ़ साधारण सिपाहियों के समझ आ जाने वाली भाषा लिखी है, दूसरी तरफ फौज में जोश पैदा करने वाली जोशीली भाषा का भी ख़्याल रखा है। इस मकसद के लिए नये समासी शब्द बनाए और नये शब्दों की सृजना भी की गई है जैसे— वडजोधी, वरिआमी, पठाणी, इआणी, संघरवाए, संगलीआले, खरचामी, भीहावले, रोहावले, संगलीआले, मुछलीआले, जट्टाले, जमधाणी, जमधड़ी आदि। इसके साथ ही गुरु साहिब ने 'चंडी की वार' में अरबी-फ़ारसी के अनेक शब्दों का इस्तेमाल किया है, जैसे— गोशत, दहिशत, फौजां, फ़रमाइश, रज़ादी शाही, कुदरत, तेग़, तन, बखतर, जंग, नेज़ा, तीर, नीसाणु आदि।

'वार' की कथा में रहस्यवादी शक्तियों का प्रदर्शन परंपरागत कथा से कम किया गया है, परन्तु जहाँ शामिल किया गया है, वहाँ 'वार' की कथा में नाटकीयता और रोचकता का विस्तार भी होता है।[५] दुर्गा की शक्ति का प्रदर्शन 'वार' में अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है :

दुरगा अतै दानवी भेड़ पइआ सबाहीं।।
ससत्र पजूते दुरगसाह गह सभनीं बाहीं।।
सुंभ निसुंभ संघारिआं वथ जेहे साहीं।।
फउजां राकसिआरीआ देखि रोवनि धाहीं।।
मुहि कुड़्चे घाह दे छड्ड घोड़े राहीं।।
भजदे होए मारीअन मुड़ झाकन नाहीं।।५४।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने असंख्य उदाहरणों और इशारों उपयोग द्वारा बिंबों की सृजना कर युद्ध के वृत्तांत को प्रभावशाली और रोचक बनाया है :

बज्जे संगलीआले संघर डोहरे।।
डहे जु खेत जटाले हाठां जोड़ि कै।।
नेजे बंबलीआले दिसन्न ओरड़े।।
चल्ले जाण जटाले नावन गंग नूं।।४६।।

कुल मिलाकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा विरचित 'चंडी की वार' फौज में वीर रस उत्पन्न करती है। 'वार' की सृजनात्मिकता का आधार चाहे स्थाप्ति के लिए संघर्ष को माना जा सकता है, मगर साहित्यक रूप में 'वार' के तत्वों की संपूर्णता वाली यह सर्वोत्तम वृत्तांतमयी बाणी है। इस 'वार' की ख़ासियत यह है कि जहाँ नायक की बहादुरी और शूरवीरता दरसाई गई है, वहाँ खलनायक को पूरे जोश और उत्साह के साथ मुकाबला करते हुए दृष्टिगोचर किया गया है।

संदर्भिका :

१. स. खुशवंत सिंघ, सिक्ख इतिहास- (भाग प्रथम), लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, २००६, पृष्ठ ८७
२. दोहरा छंद
३. सिरखंडी छंद
४. निशानी छंद
५. धरम सिंघ, हिरदेजीत सिंघ भोगल, पंजाबी साहित दा इतिहास (१७०० ई. तक), गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर साहिब २०११, पृष्ठ १२०

श्री हरिमंदर साहिब की कला और सिक्ख कलाकार

-डॉ. हरबंस सिंघ*

हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि।।
रवि ससि दीप अनूप जोति
त्रिभवणि जोति अपार।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५७)

हरि मंदरु हरि का हाटु है
रखिआ सबदि सवारि।।
तिसु विचि सउदा एकु नामु
गुरमुखि लैनि सवारि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४६)

जैसे 'हरिमंदर' की कल्पना श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने अपने वचनों के द्वारा की थी उस 'हरिमंदर' (श्री हरिमंदर साहिब) की स्थापना अमृत सरोवर के मध्य कर श्री गुरु अरजन देव जी ने उसमें शब्द-गुरु (अर्थात् हरि-नाम) की ज्योति जगा दी और इस प्रकार 'सच्चे हाट' के द्वार हर किसी के लिए खोल दिए। यहाँ पर केवल सच्चे सौदे (हरि-नाम) का ही व्यापार होता है और इस व्यापार का लाभ पाकर गुरमुख लोग अपना जीवन संवार लेते हैं, परन्तु मनमुख इस 'हरिमंदर' की समझ न पाकर सदा अज्ञानता के अंधकार में भटकते हुए अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं :

हरि मंदर महि नामु निधानु है
ना बूझहि मुगध गवार ।।. . .
हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ।।
नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४६)

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब सिक्खों का शिरोमणि स्थान है। यह खालसा पंथ, सिक्ख संस्कृति और सिक्ख कला का महान केंद्र है। श्री हरिमंदर साहिब उस सरोवर में शोभित है जिसके नाम पर शहर को 'अमृतसर' नाम से जाना जाता है।

'अमृतसर' शब्द का अर्थ शब्दकोश के अनुसार यह है— अमृत सरोवर, अमृत का कुंड, अमृत का ताल। गुरबाणी के अनुसार इसका अंतर्निहित तात्पर्य है— सतिगुरु, वाहिगुरु, गुरु या नाम-रूपी अमृत का सरोवर, जिसमें स्नान कर मनुष्य के तन और मन पर लगी मैल तो उतरती ही है, साथ ही उसके अंदर जल रही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तथा ईर्ष्या की अग्नि भी बुझ जाती है और उसका हृदय शांत एवं निर्मल हो जाता है :

अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी
हरि अंम्रित सरि नाता।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५१०)

**३-सी/३८, द्वितीय तल, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली— ११०००५, फोन : ८८६०४-०८७९७*

बिखिआ मलु जाइ अंम्रित सरि नावहु
गुर सर संतोखु पाइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०४३)

जिस स्थान पर अब गुरु की नगरी— श्री अमृतसर साहिब सुस्थित है, कहते हैं कि १५७३ ई. से पूर्व यहाँ पर घना जंगल हुआ करता था। यहाँ पर पानी का एक जोहड़ (ढाब) था, जिसके आस-पास कई जड़ी-बूटियों एवं बेर के वृक्ष थे। यह नगरी, जिसका पहला नाम 'चक्क रामदास' व 'रामदास पुर' था, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी की भारत के प्रमुख नगरों की गणना में एक महत्वपूर्ण देन है। कुछ पंथ-विरोधी तत्वों द्वारा इस स्थान का सम्बन्ध कई पौराणिक घटनाओं के साथ जोड़ा जाता है, जो बिल्कुल गलत है।

श्री अमृतसर साहिब केवल पंजाब का प्रमुख शैक्षिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक, पुरातन और नवीन कला का केंद्र ही नहीं, बल्कि इसके साथ सिक्ख धर्म की भावनात्मिक निकटता बहुत गहरी है। प्रत्येक सिक्ख के मन में श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के दर्शन और अमृत सरोवर में स्नान करने की चाह इतनी प्रबल होती है कि वह अपनी दैनिक अरदास में भी श्री अमृतसर साहिब के दर्शन-स्नान की माँग अकाल पुरख से करता है।

यह एक अटल सच्चाई है कि जब कोई भी निश्चयवान गुरसिक्ख एक बार अमृत सरोवर में स्नान कर लेता है तो उसके मन में से मौत का भय हमेशा-हमेशा के लिए दूर हो जाता है और फिर उसमें बड़े से बड़े खतरों व शक्तियों के साथ टकराने का साहस पैदा हो जाता है। यही कारण है कि जब कभी भी सिक्ख धर्म को ख़त्म करने का यत्न किया गया, सबसे पहला निशाना श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब और श्री अमृतसर को ही बनाया गया। अहमद शाह अब्दाली के समय श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब को तीन बार (१७५७ ई., १७६२ ई. तथा १७६४ ई.) में गिराया गया और बरबाद किया गया। हर बार की तबाही और बरबादी के बाद सिंघों ने इसे फिर से बना कर यह ज़ाहिर कर दिया कि वे जिंदा हैं, मृत नहीं।

सिक्ख और कुछ तो बरदाश्त कर सकता है परन्तु अपने पवित्र गुरुधामों का अपमान सहन नहीं कर सकता। जब मस्से रंघड़ ने श्री दरबार साहिब को अय्याशी का अड्डा बनाना चाहा तो दो शूरवीर योद्धाओं— भाई सुक्खा सिंघ और भाई महिताब सिंघ ने अपनी जान की परवाह न कर संगीन फ़ौजी पहरे के होते हुए भी उसका सिर उतार फेंका। जिस जगह पर उन्होंने अपने घोड़े बाँधे थे वहाँ अब गुरुद्वारा इलायची बेर साहिब है। यहाँ बैठ कर ही श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की सेवा करवाई थी। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब की आधारशिला १ माघ, १६४५ (जनवरी, १५८८ ई.) वाले दिन कादरिया

संप्रदाय के प्रसिद्ध सूफ़ी संत साँई मियां मीर जी से रखवाई थी।

१८वीं सदी के दूसरे मध्य में अफगान आक्रमणों के दौरान श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब को गिरा कर अमृत सरोवर को पाट दिया गया। सिक्ख मिसलदारों ने १७६५ ई. में बैसाखी के अवसर पर यहाँ एकत्रित होकर यह निर्णय किया कि अब वे न केवल श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का नये सिरे से निर्माण करेंगे बल्कि किसी भी देसी या विदेशी हमलावर को इसकी परिक्रमा तक भी पहुँचने का मौका नहीं देंगे। वे एकजुट होकर हर हमले का मुकाबला करेंगे और ख़ालसा पंथ की शान को अपने शुभ गुणों व इत्तफ़ाक के साथ दुनिया में प्रकट करेंगे।

इस निर्णय के बाद उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के पुनर्निर्माण के लिए एक चादर बिछाई और संगत से अपील की कि वह इस शुभ कार्य में अपना यथायोग्य योगदान दे। कहते हैं कि पहले ही दिन सात लाख रुपया इकट्ठा हो गया। मिसलदारों ने इस पैसे को श्री अमृतसर साहिब के एक साहूकार करोड़ी मल्ल के पास जमा करवा दिया। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के पुनर्निर्माण के कार्य की देखरेख के लिए भाई बिधीचंद के वंशज भाई देसराज को नियुक्त किया गया। इसका वर्तमान सुंदर और भव्य स्वरूप महाराजा रणजीत सिंघ के समय अस्तित्व में आया। महाराजा ने श्री दरबार साहिब की साजसज्जा पर डेढ़ करोड़ से अधिक रुपया ख़र्च किया। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के अंदर उपलब्ध विभिन्न प्रकार की कला के ख़ूबसूरत नमूने उस समय की ही देन हैं। श्री दरबार साहिब पर किया गया सोने का कार्य भी महाराजा की असीम श्रद्धा और प्रेम का ही प्रकटीकरण है।

आओ! अब कुछ विचार श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की बहुपक्षीय कला के बारे में साझा कर लें :—

मोहराकशी या गीले गच पर रंगों को भर कर बेल-पौधे, फूल-पत्तियाँ तथा अन्य आकृति-योजना की कला का काम शुरू-शुरू में महाराजा रणजीत सिंघ ने चिन्युट के मुसलिम कारीगरों को सौंपा, जिन्होंने अपनी कला और बौधिकता के मुताबिक श्री दरबार साहिब की दीवारों का इस कला के माध्यम से शृंगार करने का कार्य आरंभ किया। १८१० या १८१५ ई. के आस-पास महाराजा के दरबार में स. शेर सिंघ नामक एक कलाकार आया, जिसने लाहौर के महलों का शृंगार करने के लिए अपनी सेवाएं अर्पण कीं। जब महाराजा ने उसके कार्य को देखा तो वे इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने ने शेर सिंघ को श्री अमृतसर साहिब भेज दिया, ताकि यह कलाकार श्री दरबार साहिब में हो रहे सजावट के कार्य में अपना योगदान दे सके। क्योंकि महाराजा के अपने एक शहजादे का नाम शेर सिंघ था, इसलिए उन्होंने इस

कलाकार का नाम बदल कर 'केहर सिंघ' रख दिया। सिक्ख इतिहास में यह कलाकार अब इसी नाम से ही जाना जाता है। स. केहर सिंघ ने मोहराकशी की शिक्षा मुसलिम उस्तादों और कांगड़ा के हिंदू कलाकारों से हासिल की थी। उसके पास पारदर्शी आँख थी और वह इस कला की बारीकियों से पूरी तरह से वाकिफ था। सबसे बड़ी बात कि वह पूर्ण गुरसिक्ख था और सिक्खी फलसफे व सिक्खी आत्मा को पूर्ण रूप से समझता था। वह अपनी कला में गुरबाणी जैसा सूक्ष्म आनंद पैदा करना चाहता था। उसने अपने चित्रों में न तो मुसलिम कलाकारों की तरह तड़क-भड़क को आने दिया और न ही अपने चित्रों में देवी-देवताओं का चित्रण कर मिथिहास को भारू होने दिया। रंगों की अमीरी होने के बावजूद भी इन चित्रों में दुनियावी चंचलता का प्रकटीकरण नहीं बल्कि कीर्तन जैसी मिठास और सांगीतिक लय का ही विस्मयकारी रंग है। इस कलाकार ने ज्यादातर कार्य दर्शनी ड्योढ़ी और श्री अकाल तख़्त साहिब की दीवारों पर किया था। (यह सारा कार्य ज्ञानी संत सिंघ की निगरानी में हुआ था।)

स. केहर सिंघ के दो भतीजे— स. किशन सिंघ और स. बिशन सिंघ मोहराकशी के उस्ताद कलाकार थे। स. बिशन सिंघ ने इस कला की शिक्षा अपने चाचा और कांगड़ा के कलाकारों से हासिल की थी। उसके उस्तादों में एक जै सिंघ भी था, जिसने स. बिशन सिंघ को बारीक फूल-पत्तियाँ बनाने और रंगों का उपयुक्त उपयोग करने की शिक्षा प्रदान की थी। स. बिशन सिंघ ने अधिकांशत: परियों, साँप, हाथी और फूलों के चित्र ही बनाए हैं। स. बिशन सिंघ का कार्य श्री दरबार साहिब के अंदर और जीने (सीढ़ियों) में देखा जा सकता है। पूरब दिशा की बीच वाली खिड़की में उसने अपना नाम भी लिखा है। महाराजा रणजीत सिंघ ने इन दोनों भाइयों के कार्य से प्रसन्न होकर इन्हें जागीर और धन-दौलत देकर मालामाल कर दिया था।

मोहराकशी की इस कला को स. बिशन सिंघ के पुत्रों— भाई निहाल सिंघ और भाई जवाहर सिंघ ने आगे बढ़ाया। इन्होंने उम्र भर श्री दरबार साहिब की दीवारों का अपनी कलाकृत्तियों द्वारा शृंगार करने के लिए अटूट मेहनत की। कहते हैं कि दोनों भाइयों पर वेदांत का गहरा प्रभाव था और यह प्रभाव उनके द्वारा बनाए गए चित्रों में भी देखा व अनुभव किया जा सकता है। कुछ चित्रों में मानव के आस-पास हाथी दिखाए गए हैं। हाथी काम का प्रतीक है। ये हाथी एक तरह से मानव में प्रबल काम-प्रवृत्तियों के ही सूचक हैं, जिन्हें केवल संयम और नाम-सुमिरन द्वारा ही जीता व मारा जा सकता है। किस्मत को यह मंजूर नहीं था कि इनकी संतान होती और इस कला का गुण अगली पीढ़ी तक चलता। फिर भी इनके एक काबिल शागिर्द स. गिआन सिंघ चित्रकार

(१८८३-१९५३ ई.) ने इस कला को हमारे आधुनिक युग तक आगे बढ़ाया है। इस महान कलाकार का देहांत स्न १९५३ ई. में हुआ और तत्पश्चात् एक तरह से मोहराकशी की कला भी पंजाब से लुप्त हो गई।

एक अन्य सिक्ख, जिसने श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को मोहराकशी तथा अन्य कौशल द्वारा सजाने की सेवा की, वो था— स. जवाला सिंघ, जो कि महाराजा के देहांत से कुछ वर्ष पूर्व ही महाराजा के दरबार में शामिल हुआ था। स. जवाला सिंघ ने कुछ समय श्री हरिमंदर साहिब में कार्य किया और उसके बाद इस कार्य को उसके पुत्र स. महिताब सिंघ ने पूरी ईमानदारी व श्रद्धा-भावना के साथ आगे बढ़ाया। उसने न केवल श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब में ही मोहराकशी का कार्य किया बल्कि श्री दरबार साहिब, श्री तरनतारन साहिब और श्री बाउली साहिब श्री गोइंदवाल साहिब में भी अपनी कला के कमाल प्रस्तुत कर कला जगत को चकित कर दिया। उसकी ज्यादा रुचि सिक्ख गुरु साहिबान के चित्र या उनके जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को मूर्तिमान करने में थी। गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब की पहली मंजिल पर श्री गुरु नानक देव जी के जीवन में से पेश की गई अनेक झांकियां भाई महिताब सिंघ की कला का ही कमाल हैं।

स. महिताब सिंघ के बाद श्री हरिमंदर साहिब में इस कला को उसके शिष्य स. हरनाम सिंघ ने आगे बढ़ाया और श्री हरिमंदर साहिब में हुए मोहराकशी के पुराने कार्य को पुनः मौलिक रूप देने में उसके पुत्र स. आत्मा सिंघ ने जी-जान एक कर दी। लगभग ४०-४५ वर्ष पूर्व जब मेरी मुलाकात उसके साथ हुई थी तो वह श्री हरिमंदर साहिब की पहली मंजिल पर पुराने चित्रों को नये रंगों के साथ वही पुराना रूप देने में मशरूफ था, जैसे वे महाराजा के जीवन-काल में चित्रित किए गए थे। उसका साथ उसके शागिर्द स. प्रीतम सिंघ था। १९८४ ई. से पहले पुराने चित्रों को जिंदा रखने का कार्य भाई हरभजन सिंघ और भाई मनमोहन सिंघ कर रहे थे।

अब गुरुधामों को इस पुरातन कला के साथ सजाने का रिवाज़ नहीं और न ही कलाकारों को उतना पारिश्रमिक मिल सकता है जिससे वे अपना जीवन-निर्वाह अच्छी तरह से चला सकें। श्री हरिमंदर साहिब की दीवारों के ऊपरी हिस्से— गुंबद, ममटी और छतरी पर सुनहरी कार्य हुआ है। पीतल के पत्रों पर सोने के वर्क इस प्रकार लगाए गए हैं कि देखने वाले को ये ठोस सोने की ही चादरें दिखाई देती हैं। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब पर २२० पौंड से अधिक सोना लगा हुआ है। जानकार व्यक्तियों का कहना है कि हर मुरब्बा फुट पर ११-११ ग्राम सोने के वर्क लगे हुए हैं।

सिक्ख शहीद परंपरा के अनमोल रत्न : बाबा दीप सिंघ जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

सिक्ख इतिहास श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक दस गुरु साहिबान के पावन जीवन, मानवता पर किये महान उपकारों और उनके द्वारा उच्चरित बाणी के समाज पर पड़े युगांतरकारी प्रभाव के स्वर्णिम प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है जो किसी को भी विस्मित कर देने वाला है। श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सरबंस-दान, त्याग और कुर्बानी की अप्रतिम उदाहरण है, जिसे संसार ने पहली बार देखा और आवाक रह गया। कुर्बानी के इस क्रम में हर गुरसिक्ख पांच प्यारों, चार साहिबजादों और चालीस मुकतों को स्मरण करता है। इन महान बलिदानों ने शहीदियों की एक लंबी परंपरा स्थापित की। गुरसिक्ख अपनी अरदास में सभी शहीदों को समान भावना और आदर सहित स्मरण करता है। समय-समय पर अगण्य शहीदियां हुईं, जो गुरु और गुरु-पंथ को समर्पित थीं। ऐसे शहीदों में बहुत-से सिक्खों ने अपने विलक्षण प्रभाव से इतिहास में अलग पहचान स्थापित की। इन शहीदों में एक प्रमुख नाम बाबा दीप सिंघ जी का भी है।

बाबा दीप सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन सिक्खों में थे। गुरबाणी के गहन ज्ञान और गुरु-पंथ के प्रति अपने अडोल समर्पण के कारण वे गुरु गोबिंद सिंघ जी के निकटवर्ती सिक्खों में शामिल थे। इस भावना को उन्होंने जीवनपर्यंत बनाये रखा। पचहत्तर वर्ष की आयु में भी गुरु-घर की मर्यादा हेतु युद्ध करते हुए अपना शीश तक देने में संकोच नहीं किया और वीरता का एक अमूल्य अध्याय लिख कर श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में शहीदी प्राप्त की। जब कोई गुरसिक्ख गुरु के कार्य के लिये आगे आता है तो गुरु स्वयं उसे बल एवं सामर्थ्य प्रदान करता है और उससे असंभव लगने वाले कार्य भी संभव करवाता है। इस तरह वह अपने गुरसिक्ख को श्रेष्ठता प्रदान करता है। गुरमति के मर्म को तनिक भी समझने वाला गुरसिक्ख यह जानता है कि गुरु ने अपना कार्य स्वयं सम्पन्न किया है और श्रेय का अधिकारी उसे बना दिया है। बाबा दीप सिंघ जी में वृद्धावस्था में भी युवक जैसी वीरता भर देना गुरु साहिबान का कौतुक था और वे इतिहास में अमर हो गये।

बाबा दीप सिंघ जी का जन्म श्री अमृतसर साहिब जिले के पहूविंड नामक ग्राम में हुआ था। कोई निश्चित तिथि ज्ञात न होने के कारण इतिहासकारों ने उनका जन्म सन् १६८०-८२ के आस-पास का माना है। उनके पिता का नाम भाई भगता जी और माता का नाम माता जिऊणी जी था। जन्म के पश्चात उनका नाम 'दीप' रखा गया।

** ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

उनका बचपन गांव में ही व्यतीत हुआ। बाबा दीप सिंघ जी अपने माता-पिता से गुरु साहिबान की महिमा निरंतर सुनते रहते थे। गुरबाणी के लिये भी प्यार और सत्कार उनके मन में सहज ही जाग्रत हो चुका था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी खालसा का सृजन कर चुके थे और एक स्वाभिमान वाली कौम अस्तित्व में आ चुकी थी। आपने युवावस्था में प्रवेश किया तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन की आत्मप्रेरणा उत्पन्न हुई। बाबा दीप सिंघ जी अपने माता-पिता और स्थानीय संगत के साथ बड़ी भावना सहित श्री अनंदपुर साहिब आ गये और अपने माता-पिता संग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान किया। बाबा दीप सिंघ जी और बाबा नौध सिंघ जी ने एक साथ अमृत-पान किया था। अमृत-पान के पश्चात उनके पिता का नाम भाई भगत सिंघ, माता का नाम जिऊणी कौर उनका नाम 'दीप' से 'दीप सिंघ' हो गया।

बाबा दीप सिंघ जी बलवान व फुर्तीले स्वभाव के थे। अमृत-पान करने के पश्चात वे श्री अनंदपुर साहिब में रह कर गुरु-घर की सेवा करने लगे। अपने समर्पण के कारण वे शीघ्र ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रशंसा के पात्र बन गये। कुछ समय पश्चात उनके माता-पिता अपने गांव वापिस लौट आये, किन्तु बाबा दीप सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब में ही रह गये। श्री अनंदपुर साहिब में बाबा दीप सिंघ जी ने लगभग पांच वर्ष व्यतीत किये। इस अंतराल में उन्होंने सेवा और भक्ति के साथ ही गुरमुखी, अरबी और फारसी आदि भाषाओं में निपुणता भी प्राप्त कर ली। कहते हैं कि इसका प्रबंध बाबा दीप सिंघ जी की प्रतिभा को देखते हुए स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया था। इस दौरान उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब में कई युद्धों में भी भाग लिया। जब सन् १७०४ में गुरु साहिब ने मुगलों की कुरान की खाई झूठी कसम पर विश्वास कर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा तो गुरु साहिब का परिवार बिछड़ गया। माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी दिल्ली आ गये। उनके साथ आने वाले सिक्खों में भाई मनी सिंघ जी, भाई धन्ना सिंघ जी और भाई जवाहर सिंघ जी के साथ बाबा दीप सिंघ जी भी थे। कुछ समय दिल्ली में रहने के पश्चात वे अपने गांव पहूविंड वापिस आ गये। यहां आकर उन्होंने पंथक-प्रचार का कार्य आरंभ कर दिया। सिक्ख जुड़ने लगे। इधर महान इतिहास रचा जा रहा था। चमकौर के युद्ध, चार साहिबजादों की शहीदी, अगण्य सिक्खों की शहादत, श्री मुक्तसर साहिब के युद्ध के पश्चात विचरते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तलवंडी साबो आ गये और पड़ाव किया। एक लंबे और चुनौतियों भरे समय के पश्चात यहां गुरु साहिब ने अपना कमरबंद खोला और विश्राम किया, इसीलिये इस स्थान का नाम 'दमदमा साहिब' पड़ा।

गुरु साहिब के आगमन का समाचार सुन कर बड़ी संख्या में सिक्ख संगत जुड़ने लगी। गुरु-दरबार की शोभा स्थापित होने लगी। अमृत काल में दीवान सजा और 'आसा की वार' का गायन किया गया। वर्ष सन् १७०५ चल रहा था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के मन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी सम्मिलित कर 'ग्रंथ' को सम्पूर्ण करने का विचार आया। उस समय आदि

बीड़ का स्वरूप धीरमल्ल के पास था। गुरु साहिब ने स्वरूप लाने के लिये प्रमुख सिक्खों को धीरमल्ल के पास भेजा, किन्तु उसने स्वरूप सौंपने से इन्कार कर दिया। धीरमल्ल स्वयं को गुरुगद्दी का अधिकारी समझता था और गुरुगद्दी न प्राप्त होने से भारी आक्रोशित था। धीरमल्ल ने अनर्गल प्रलाप किया और कह दिया कि यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इतने ही सामर्थ्यवान हैं तो स्वयं क्यों नहीं (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) लिख लेते। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को पूरी बात पता चली तो गुरु साहिब ने इसे सहजता से लिया और उग्र सिक्खों को शांत रहने को कहा। इस बीच ऐसा संयोग बना कि गुरमति के विद्वान भाई मनी सिंघ जी, जो माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी के साथ दिल्ली में थे, दमदमा साहिब आ पहुंचे। गुरु साहिब ने भाई मनी सिंघ जी का योग्य सत्कार किया और वार्तालाप करते हुए आदि ग्रंथ साहिब को सम्पूर्ण करने की इच्छा प्रकट की। गुरु साहिब ने कहा कि वे बाणी लिखवायेंगे और भाई मनी सिंघ जी लिखेंगे। भाई मनी सिंघ जी ने गुरु साहिब की आज्ञा लेकर अपनी सहायता के लिए बाबा दीप सिंघ जी को पहूविंड से बुलवा लिया। बाबा दीप सिंघ जी जब दमदमा साहिब पहुंचे तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि लिखारी भाई मनी सिंघ जी होंगे और कागज, कलम, स्याही की सेवा बाबा दीप सिंघ जी करेंगे। इस तरह कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्णता का यह महान और पावन कार्य सम्पूर्ण हुआ। भाई मनी सिंघ जी और बाबा दीप सिंघ जी ने पूरी भावना से अपनी सेवा का निर्वहन किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जब दमदमा साहिब से दक्षिण की ओर प्रस्थान करने लगे तो बाबा दीप सिंघ जी को यहीं रह कर गुरबाणी के प्रचार-प्रसार का जिम्मा सौंपा। गुरु साहिब ने उन्हें निम्न आदेश दिये :—

१. विद्यार्थियों को विद्या प्रदान करना।

२. अमृत-पान करा मर्यादा दृढ़ कराना।

३. गुरमति के अनुसार गुरबाणी और गुरु-इतिहास का प्रचार करना।

४. हर विपत्ति में पंथ का साथ देना।

५. आदि बीड़ की प्रतिलिपियाँ तैयार करना।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रस्थान के पश्चात बाबा दीप सिंघ जी ने पूरी तन्मयता और तत्परता से उनके आदेशों का पालन आरंभ कर दिया। वे विद्यार्थियों को पढ़ाते, गुरु साहिबान का इतिहास बताते और गुरबाणी के संग जोड़ते। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के चार स्वरूप अपनी हस्तलिपि में तैयार किये, क्योंकि उस समय तक प्रिंटिंग प्रेस अस्तित्व में नहीं आये थे। यह बाबा दीप सिंघ जी का अमूल्य योगदान था। कहते हैं कि उन्होंने अरबी भाषा में भी एक स्वरूप तैयार कर अरब देशों में प्रचार-प्रसार हेतु भेजा था। दमदमा साहिब में रहते हुए बाबा दीप सिंघ जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी भी संकलित की।

जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आदेशानुसार बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब आकर मुगलिया हुकूमत पर हमला किया, तो अन्य सिक्ख जत्थों की तरह बाबा दीप सिंघ जी ने भी पांच सौ सिक्ख सैनिकों के अपने जत्थे सहित युद्धों में भाग लिया था। सन् १७४८ में जब सिक्ख

मिसलें गठित हुईं तो बाबा दीप सिंघ जी शहीदी मिसल के जत्थेदार बने और उनके साथ भाई गुरबखश सिंघ, भाई सुद्धा सिंघ, भाई मेर सिंघ, भाई हीरा सिंघ, भाई प्रेम सिंघ, भाई दरगाह सिंघ आदि उप जत्थेदार बने थे। बाबा बंदा सिंघ की शहीदी के बाद बाबा दीप सिंघ जी दमदमा साहिब वापिस लौट आये। वे जहां सिक्खों को गुरबाणी, गुरु-सिद्धांतों के संग जोड़ते, वहीं पंथ की रक्षा के लिये सदैव तैयार रहने को भी प्रेरित करते रहते थे। पंथ की एकता के लिये भी वे यत्नशील रहते थे। श्री दरबार साहिब सिक्खों का केंद्रीय स्थान बन चुका था। यहां की (मुख्य) ग्रंथी की सेवा भी भाई मनी सिंघ जी को प्राप्त हुई थी, जो इसके सर्वथा योग्य थे।

सिक्खों को निरंतर विरोध और दमन का सामना करना पड़ रहा था। अफगानिस्तान से आकर भारत पर बार-बार हमले करने वाला अहमद शाह दुर्रानी उस समय सिक्खों का सबसे बड़ा वैरी बना हुआ था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिआ के नेतृत्व में सिक्खों ने जब दुर्रानी के काफिले से कैद कर अफगानिस्तान ले जाई जा रही हिन्दू स्त्रियों को मुक्त कराया था, उस हमले में बाबा दीप सिंघ जी ने भी अपने जत्थे सहित भाग लिया था। अहमद शाह दुर्रानी इस हमले से आवाक रह गया था। उसे अब तक ऐसे सशक्त प्रतिरोध का कभी सामना नहीं करना पड़ा था। यह उसे बेहद अपमानजनक भी लगा। उसने सिक्खों के बारे में पूरी जानकारी ली। उसे बताया गया कि सिक्खों का आध्यात्मिक केंद्र श्री अमृतसर साहिब है, जहां अमृत सरोवर से उन्हें शक्ति प्राप्त होती है। दुर्रानी ने इस स्थान को नष्ट करने की ठान ली थी। सन् १७५७ में दिल्ली की ओर बढ़ता हुआ दुर्रानी जब कुछ समय के लिये लाहौर ठहरा तो उसने श्री अमृतसर साहिब शहर को लूटा, पवित्र भवन ढहा दिये और अमृत सरोवर को कूड़े से भर दिया। जब बाबा दीप सिंघ जी को गुरु-स्थानों की बेअदबी का पता चला तो उनसे सहन नहीं हुआ। इसका प्रतिशोध लेने के लिये उन्होंने दमदमा साहिब के निकटवर्ती गांवों— जगा, बहिमण, शाहनवाला, पंजोके, फूल, महिराज, दराज, गोबिंदपुरा आदि से लगभग एक हजार सिक्ख सैनिक भर्ती किये और श्री अमृतसर साहिब की ओर चल पड़े। तरनतारन साहिब तक पहुंचते-पहुंचते उनके साथी सिक्खों की संख्या पांच हजार हो गई। सभी के मन में त्याग और कुर्बानी का भरपूर उत्साह था। श्री अमृतसर साहिब उस समय अहमद शाह दुर्रानी के सेनापति जहान खान की निगरानी में था। उसे जब सिक्खों के आगे बढ़ने की सूचना मिली तो उसने अपने सिपहसालार अताई खान को सिक्खों को रोकने और उन पर हमला करने का आदेश दे दिया। जहान खान दो हजार घुड़सवार लेकर श्री अमृतसर साहिब से आठ किलोमीटर आगे गोहलवड़ पहुँच गया, जहां मार्च सन् १७५७ में सिक्खों के साथ उसकी जबरदस्त टक्कर हुई। गुरु-स्थान की बेअदबी के कारण रोष से भरे सिक्खों ने अपनी वीरता से अफगानियों के छक्के छुड़ा दिये। सिक्ख विजय के निकट ही थे कि अताई खान अपनी फौज लेकर आ गया। इससे पासा पलट गया। सिक्ख तेजी से शहीद होने लगे। इस घमासान युद्ध में बाबा दीप सिंघ जी की गर्दन पर एक घातक वार

हुआ। बाबा दीप सिंघ जी अपनी गर्दन को एक हाथ से सहारा देते हुए व अन्य हाथ से युद्ध करते हुए श्री दरबार साहिब की परिक्रमा तक पहुंच गये। परिक्रमा में ही गुरु-स्थान की पवित्रता के लिये युद्ध करते हुए अपनी शहीदी दी।

'प्रमुख सिक्ख शख़्सीअतां' नामक पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख में डॉ. गुरनेक सिंघ ने लिखा है कि "विद्वान इस बात से पूरी तरह से सहमत हैं कि बाबा जी को गर्दन पर एक घातक एवं गहरा वार लगा और गर्दन को सहारा देकर बाबा जी परिक्रमा में पहुंच गये। दूसरी तरफ परंपरा (जनविश्वास) के अनुसार बाबा दीप सिंघ जी का शीश कट गया था। बाबा जी अपना कटा हुआ शीश अपने बायें हाथ की हथेली पर टिका कर लड़ते गये और परिक्रमा में अपना शीश भेंट किया व शहीद हो गये। यदि परंपरा वाले तथ्य को इतिहासकार यह कह कर उल्लेख करने से झिझकते हैं कि यह करामात है तो क्या यह करामात नहीं है कि ७०-७५ वर्षीय वयोवृद्ध की गर्दन पर इतना गहरा वार हुआ हो कि गर्दन को एक हाथ से सहारा देकर संभाला जाए और फिर भी बाबा जी इस हाल में भयंकर युद्ध करते हुए परिक्रमा तक पहुँचने में सफल हो जायें।" इतिहास और विश्वास के भी आगे गुरु का वचन है जिसे हर सिक्ख शीश झुका कर स्वीकार करता है। गुरबाणी की प्रेरणा से गुरसिक्ख किसी भी विपत्ति, विपरीत स्थिति से विचलित नहीं होता और परमात्मा को सदैव अपने अंग-संग मानता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने वचन किया कि "जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ।।" परमात्मा की शरण तथा कृपा गुरसिक्ख को अचिंत और निर्भय बना देती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने इसे और स्पष्ट किया :

बलु होआ बंधन छुटे
सभु किछु होत उपाइ।।
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै
तुम ही होत सहाइ।।

(पन्ना १४२९)

गुरु साहिबान की प्रेरणा है कि सभी कुछ परमात्मा के हाथ में है और वह युगों-युगों से अपने भक्तों की लाज रखता आया है। बाबा दीप सिंघ जी के साथ भी ऐसा ही हुआ। वे दमदमा साहिब से परमात्मा के आगे अरदास कर चले थे और परमात्मा उनका सहायक बन कर उनके साथ खड़ा हुआ, उनकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए। श्री अमृतसर साहिब में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

बाबा दीप सिंघ जी का चित्र लगाना, उनका स्मरण करना तब सार्थक है जब हम उनके जैसा समर्पित सिक्ख बनने की प्रेरणा ग्रहण करें, उनकी शहीदी की भावना में श्री गुरु रामदास साहिब की महानता और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपा के दर्शन करें।

बाबा दीप सिंघ जी का गुरबाणी के प्रति समर्पण और गुरु व गुरु-स्थानों के लिये प्रेम-भाव हर सिक्ख के लिये प्रेरणा-स्रोत है। उनका स्मरण मन में गुरसिक्खी दृढ़ कराने वाला है।

जीने की राह

हौसला

*-स. दिनेश सिंघ**

मनुष्य का विकास हौसले से होता है। (तथाकथित) दलितों का हौसला टूटा हुआ है और यह हौसला सदियों से टूटा हुआ है।'दलित' यह सोचकर ही पस्त हो जाते हैं कि हम तो दलित हैं, नीच हैं, अछूत हैं, जबकि (तथाकथित) ब्राह्मण ,ठाकुर ,बनिया, गुर्जर, जाट, अहीर आदि के हौसले इस वजह से बुलंद रहते हैं कि वे तो (तथाकथित) ऊंची जाति के हैं, हम तो ब्राह्मण हैं।''हम तो ठाकुर हैं, हम गुर्जर हैं, हम जाट हैं, हम फलां हैं...।'' 'दलितों' का हौसला और मनोबल सदियों से जाति के आधार पर नीच घोषित करके तोड़ा गया है। इसी हौसले को बुलंद करने के लिए सिक्ख गुरु साहिबान ने सिक्खी का निर्माण किया . . .। खालसा की साजना की। गुरु साहिबान ने सिक्खों में हौसला इतना भर दिया कि सिक्ख अपने आप को 'सरदार' कहते हैं। गुरु ने अपने सिक्खों को इतनी बड़ी दाति दी कि गुरु का एक सिक्ख सवा लाख के बराबर होता है।

सिक्ख बनने के बाद मेरा हौसला बुलंद है। मेरा हौसला इसलिए बुलंद है कि मैं गुरु का सिक्ख हूं , खालसा हूं , सरदार हूं आप भी अपना हौसला बुलंद कर सकते हैं। इसके लिए आपको गुरु की शरण में आना पड़ेगा। गुरु की शरण में आते ही आपकी गुलामी छूट जाएगी और आपको (मानसिक) आजादी मिल जाएगी, आपको आजादी भरा जीवन मिल जाएगा। फिर आप और आपकी कौम में शूरवीरता की चमक होगी, वीरता होगी, निडरता होगी। फिर कोई भी उपद्रवी आपकी ओर आंख उठाने की जुर्रत नहीं करेगा। आप 'गीदड़' से 'सिंघ' बन जाएंगे। आप मानसिक गुलामी से मुक्त हो जाएंगे, आप बुलंद हौसले वाले योद्धा बन जाएंगे। अब तय आपको ही करना है कि आपको पस्त हुए मनोबल के साथ जीना है, 'दलित' बनकर ही जीना है या अपना हौसला बुलंद करना है , सदियों पुरानी गुलामी से मुक्ति पानी है। आपका एक निर्णय आपके और आपके समाज के जीवन को बदल सकता है। तो फिर देर किस बात की! आप निर्णय लीजिए! जिस विचारधारा ने आपको गुलाम बनाया है उसे ठोकर मारिए! फिर आपकी सामाजिक जीवन में और आत्मिक जीवन में जीत पक्की है!

नाम गरीब निवाज हमारा,
है जगमै प्रसिद्ध अपारा।
सो सफला जग मैं तब थै है।
लघु जातिन को बुडप्पन दै हैं।
जिन की जाति और कुल मांही।
सरदारी नहि भई कदाही।
कीटन तै इनको म्रिगिंदू
करी हरन हित तुरक गजिंदू
इन ही को सरदार बनावों।
तबै गोबिंद सिंघ नाम सदावों ।

*एलएलएम, नई दिल्ली, फोन: ९९७७३-००९९७

एक पाठक की प्रतिक्रिया

'गुरमत ज्ञान' की लेखक-शृंखला के एक मोती एवं गुरमति के महान विद्वान स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन' जी द्वारा 'गुरमत ज्ञान' नवंबर २०२४ अंक अपने परम मित्र डॉ. संजय जाधव जी को उपहारस्वरूप भेजा गया। तत्पश्चात् धन्यवादस्वरूप डॉ. संजय जी द्वारा यह (इलेक्ट्रॉनिक) संदेश सुचिंतन जी को भेजा गया और वो उन्होंने हमें भेज दिया। हम वो संदेश पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

— संपादक।

परम आदरणीय श्री परमजीत सिंघ जी,

सादर सति श्री अकाल!

आपके द्वारा भेजा गया 'गुरमत ज्ञान' नवंबर २०२४ का अंक देखकर बहुत खुशी हुई।

प्रस्तुत अंक ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ महान सिक्ख धर्म के मानवकल्याणकारी विचारों से अवगत होने का सुअवसर प्रदान करता है। अंक का संपादकीय विशेष विचारोत्तेजक है। सिक्ख धर्म के प्रति मेरे मन में हमेशा से ही आदर एवं सम्मान का भाव रहा है। समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय, इन मानव-मूल्यों का व्यावहारिक रूप में संवहन जिस शानदार रूप में सिक्ख धर्म में किया जाता है, वह गौरवास्पद एवं अभिमानास्पद है। नि:संदेह सिक्ख धर्म समूचे विश्व में मानवतावादी कर्त्तव्यों पर आधारित सर्वसाझा भाईचारा सृजित करता है। भारतीय संविधान में जिस बंधुता-मूल्य का आग्रह किया गया है, सिक्ख धर्म ने उस बंधुता-मूल्य को अपनी आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। प्रस्तुत अंक में प्रकाशित प्रत्येक आलेख अपने आप में विचारणीय होने के साथ-साथ जिज्ञासावर्धक भी है। 'नामे हरि का दरसनु भइआ' डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ जी द्वारा लिखित यह आलेख भक्त नामदेव जी के समग्र योगदान को रेखांकित करता है। महान भक्त नामदेव जी के विचारों का मूलगामी सार इसमें प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में इस अंक में प्रकाशित प्रत्येक आलेख पाठक के मन में उठे सवालों का तथा जिज्ञासाओं का शमन करता है। आदरणीय स. सतविंदर सिंघ फूलपुर जी द्वारा लिखित 'अकाली मोर्चे : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में' आलेख अत्यंत जानकारीपूर्ण, सारगर्भित एवं चिंतनशील है। विशेष रूप में इसकी शोध-प्रविधि सैद्धांतिकी के अनुरूप है। आदरणीय स. करनैल सिंघ सरदार पंछी जी की कविता 'श्री गुरु नानक देव जी' की पंक्तियाँ वर्तमान समय में भी बेहद प्रासंगिक हैं :

कर्मकाण्ड भी एक रुकावट है भगवान के रस्ते में,
यह है रस्ते का पत्थर जो, चुभता आने-जाने में।

पुन: संपादक-मंडल के सभी विद्वान सदस्यों एवं सभी लेखकों, रचनाकारों के प्रति आभार एवं अंक भेजने के लिए हृदयपूर्वक धन्यवाद!

-प्रोफेसर डॉ. संजय जाधव, महाराष्ट्र।

खबरनामा

माता गुजर कौर जी की ४००वर्षीय जन्म शताब्दी पंथक हर्षोल्लास सहित मनाई गई

श्री अमृतसर साहिब : २२ नवंबर : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पूजनीय माता जी माता गुजर कौर जी के ४०० वर्षीय जन्म-दिवस की शताब्दी के समारोह गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, करतारपुर, जिला जलंधर में पंथक हर्षोल्लास सहित संपूर्ण हुए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से आयोजित किये गए शताब्दी के मुख्य समारोह के दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, दल पंथ बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, तरना दल बाबा बकाला के प्रमुख बाबा जोगा सिंघ, पदमश्री बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब सहित प्रमुख पंथक शख़्सियतों ने शिरकत की और माता गुजर कौर जी के जीवन व बलिदान के हवाले से सिक्ख जगत को आदर्श जीवन-जाच के धारक बनने की प्रेरणा प्रदान की। वक्ताओं ने सिक्ख माताओं को माता गुजर कौर जी के अद्वितीय जीवन से प्रेरणा लेकर अपने बच्चों की सांसारिक और आत्मिक परवरिश करने की ज़रूरत पर बल दिया।

समारोह के दौरान संबोधित करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि माता गुजर कौर जी वे महान शख्सियत हैं, जिन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख्सियत में निखार लाने और छोटे साहिबज़ादों को बाल अवस्था में अपने अकीदे पर दृढ़ रहते हुए कुर्बानी करने के लिए तैयार किया। उन्होंने कहा कि आज संसार धर्म-निर्पेक्षता और लोकतंत्र की बात करता है, जबकि माता गुजर कौर जी के सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी १६९९ ई. में ख़ालसा की साजना कर विश्व का अद्वितीय इंकलाब लाए, जिसमें एकता, भ्रातृभाव और लोकतंत्र की मजबूती का प्रकटीकरण किया। एडवोकेट धामी ने कहा कि आज इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि सिक्ख कौम माता गुजर कौर जी के जीवन-आदर्शों के अनुसार अपनी प्राथमिकताओं का निर्धारण करे। उन्होंने सोशल मीडिया पर सिक्ख विरोधी घटनाक्रम की कड़ी अलोचना करते हुए कहा कि पंथ-विरोधी शक्तियों द्वारा सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर सिक्ख कौम की अलग होंद-हस्ती को खत्म करने की साजिशें बनाई जा रही हैं। उन्होंने कौम को ऐसे हमलों से सचेत रहने के लिए कहा।

इस दौरान तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि माता गुजर कौर जी सब्र, संतोष, सहनशीलता का महान स्रोत और विशाल हिम्मत की मालिक थीं, जिनकी कोख से सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी प्रकाशमान हुए। उन्होंने कहा कि इस आदर्श शख्सियत को हर माँ को अपना प्रेरणा-स्रोत बनाना चाहिए। जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने पंथ की मज़बूती के लिए एकजुट होने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पंथ को धार्मिक और

राजसी तौर पर कमज़ोर करने की साजिशों से सुचेत रहना ज़रूरी है। उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब की बात करते हुए कहा कि यह एक इमारत नहीं, बल्कि एक सिद्धांत है। इमारत को तो गिराया जा सकता है, लेकिन सिद्धांत और संकल्प मिटाए नहीं जा सकते। उन्होंने कहा कि इसी कारण दुश्मन सदा से श्री अकाल तख़्त साहिब को कमज़ोर करने की ताक में रहता है। अब्दाली और इंदिरा गांधी भी इसी भ्रम में रहे। उन्होंने कौम को अपनी संस्थाओं के सिद्धांत पर पहरा देने के लिए कहा।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी परविंदरपाल सिंघ, दल पंथ बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, बाबा तेजा सिंघ खुंडा कुराला, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. रणजीत सिंघ (काहलों) और ज्ञानी भगवान सिंघ जौहल ने भी संगत के साथ विचार साझा किये। समारोह के दौरान कवीशर ज्ञानी गुरमुख एम. ए. की पुस्तक भी रिलीज की गई और उपस्थित प्रमुख शख़्सियतों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सम्मानित किया। विशेष रूप से समाज-सेवा के क्षेत्र में योगदान देने वाली प्रमुख महिलाओं को भी सम्मान दिया गया। इससे पूर्व श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए और पंथ-प्रसिद्ध रागी, ढाडी एवं कवीशरी जत्थों ने संगत को गुरबाणी-कीर्तन व गुरु-इतिहास श्रवण करवाया।

गुरुद्वारा श्री कौलसर साहिब के सरोवर की कार-सेवा आरंभ

श्री अमृतसर साहिब : २९ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा, भाई गुरइकबाल सिंघ बीबी कौलां जी भलाई केंद्र वाले तथा संगत के सहयोग से गुरुद्वारा श्री कौलसर साहिब के पवित्र सरोवर की सफाई की कार-सेवा पंथक रिवायत के अनुसार आरंभ की गई। इस कार-सेवा की आरंभता सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ, ज्ञानी बलजीत सिंघ, ज्ञानी केवल सिंघ, दल बाबा बिधी चंद संप्रदाय के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ और भाई गुरइकबाल सिंघ ने समूह संगत के सहयोग से की। इससे पहले गुरुद्वारा श्री कौलसर साहिब में समारोह के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी भाई जगरूप सिंघ के जत्थे द्वारा गुरबाणी-कीर्तन किया गया। अरदास भाई प्रेम सिंघ ने की और हुकमनामा सिंघ साहिब ज्ञानी बलजीत सिंघ ने लिया।

इस अवसर पर बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान की सेवाओं में भाग लेना अच्छे भाग्य की निशानी है। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा श्री कौलसर साहिब के पवित्र सरोवर की सफाई-सेवा इससे पहले सन् २०१६ में करवाई गई थी और अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसकी सेवा करवाने के लिए भाई गुरइकबाल सिंघ जी को ज़िम्मेदारी सौंपी है। उन्होंने संगत से

अपील की कि इस सेवा में बढ़-चढ़ कर भाग लेकर अपना जीवन सफल करें।

इसी दौरान भाई गुरइकबाल सिंघ ने इस सेवा के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का धन्यवाद करते हुए कहा कि गुरु साहिब की बड़ी बख्शिश है कि यह सेवा उन्होंने हमारी झोली में डाली है। उन्होंने कहा कि गुरु-घर की सेवा किसी अच्छे भाग्य वाले इंसान को ही मिलती है। इसके साथ ही उन्होंने संगत से विनती की कि वह इस सेवा में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख शख़्सियतों को सम्मानित भी किया गया।

गुरुद्वारा श्री टाहली साहिब संतोखसर साहिब के सरोवर की कार-सेवा की हुई आरंभता

श्री अमृतसर साहिब : ९ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा श्री टाहली साहिब संतोखसर साहिब के सरोवर में से गार (कीचड़) निकालने की सेवा पंथक रिवायत के अनुसार आरंभ की गई। कार-सेवा की आरंभता सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, ग्रंथी ज्ञानी केवल सिंघ, बाबा बचन सिंघ व बाबा महिंदर सिंघ कार-सेवा दिल्ली वाले, पदमश्री बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, बाबा जगतार सिंघ तरनतारन वाले, बाबा सुखविंदर सिंघ भूरीवाले द्वारा आरंभ की गई। इससे पहले गुरुद्वारा श्री टाहली साहिब संतोखसर साहिब में हुए समारोह के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी भाई गुरदेव सिंघ ख़ालसा के जत्थे द्वारा गुरबाणी-कीर्तन किया गया। अरदास जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ ने की और पवित्र हुकमनामा ग्रंथी ज्ञानी केवल सिंघ ने श्रवण करवाया।

इस अवसर पर बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि संगत की मांग पर गुरुद्वारा श्री टाहली साहिब संतोखसर साहिब के सरोवर की सेवा बाबा बचन सिंघ व बाबा महिंदर सिंघ कार-सेवा दिल्ली वालों को सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि आज कार-सेवा की आरंभता के अवसर पर सिक्ख पंथ की प्रमुख शख़्सियतों ने शमूलियत की। संगत में सेवा के प्रति बड़ा उत्साह है। उन्होंने कहा कि अच्छे भाग्य से गुरु-घर सेवाओं में भाग लिया जाता है। उन्होंने संगत से अपील की कि वह सरोवर की चल रही सेवा में बढ़-चढ़ कर भाग ले और अपना जीवन सफल करे। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख शख़्सियतों को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, श्री दरबार साहिब के प्रबंधक स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, बाबा सुरिंदर सिंघ दिल्ली वाले, अतिरिक्त प्रबंधक स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. शमशेर सिंघ, उप प्रबंधक स. अजै सिंघ सहित बड़ी संख्या में संगत उपस्थित थी।

गुरुद्वारा साहिब रायपुर रानी, पंचकूला (हरियाणा)

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN January 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब, श्री दरबार साहिब, श्री मुकतसर साहिब

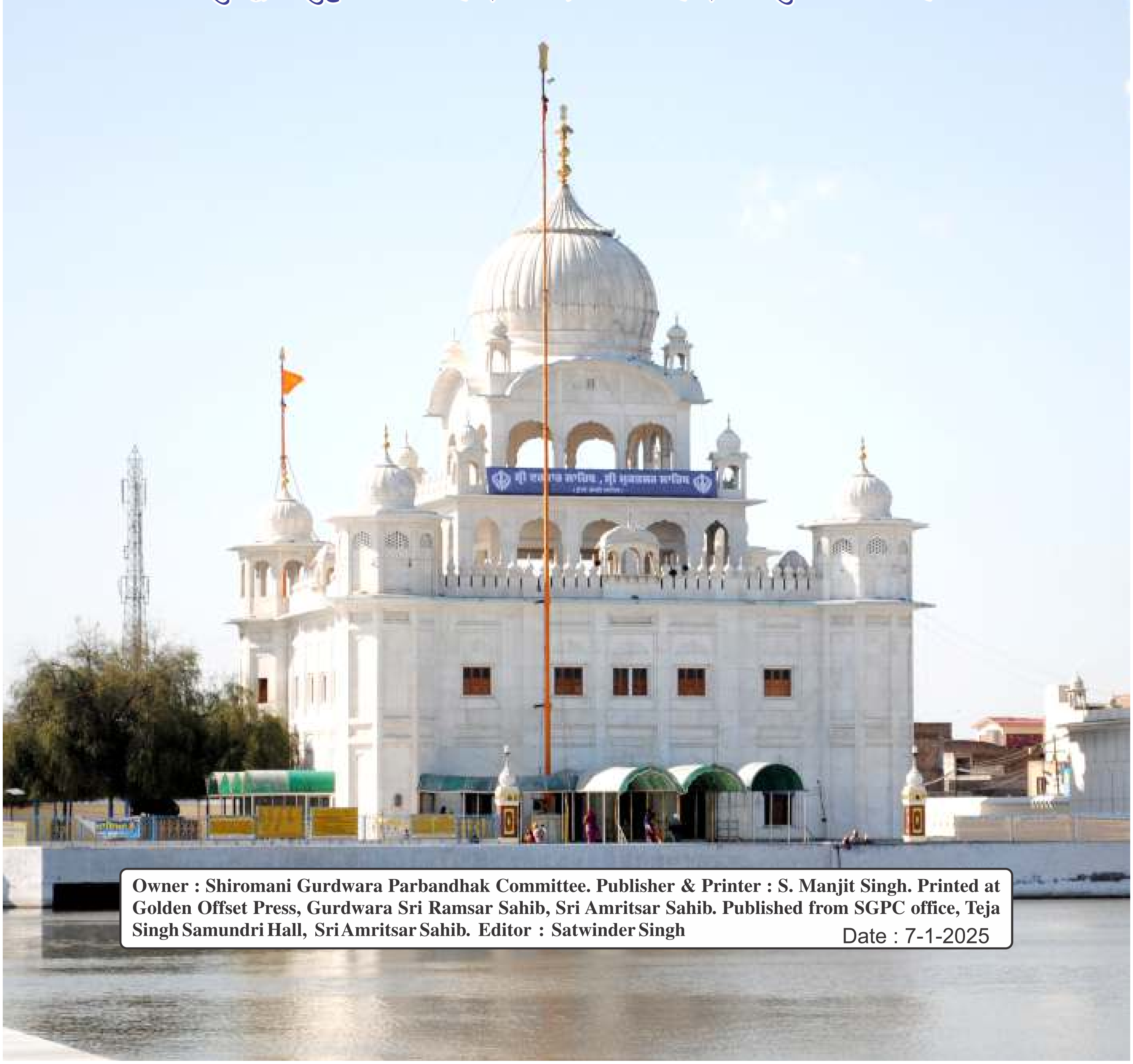

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-1-2025